RNI NO. CHHHIN/17604 TC

लाईफ वर्सिटी

मासिक

पैसा हैसियत बदल सकता है औकात नहीं

वर्ष : 1 | अंक : 11 | माह : अप्रैल 2024 | पृष्ठ : 8 | संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, 8817194979 | मूल्य : 5 रू.

आध्यात्मिक चेतना का पर्व

नवरात्रि

'या देवी सर्वभुतेषु चेतनेत्यभिधीयते'

'हे माँ, सृष्टि के समस्त जीव जंतुओं में चेतना के रूप में आप ही आप ही स्थित हो'।

चेतना का अर्थात मनुष्य की जाग्रति से है, अर्थात मन की वह अवस्था जब उसे अपने या संसार के होने का अहसास हो . चूँकि हम लोग मन से जीते हैं और मन से जीने वाले व्यक्ति के हर कार्य के पीछे एक भय छुपा होता है, यहाँ तक की व्यक्ति अगर किसी से प्रेम भी करता है तो उसमें भी डर की भावना छिपी रहती है।परन्तु जब इन्सान की चेतना निर्मल, निर्भय यानि सब गुण दोषों के पार हो जाये उसे दिव्य चेतना कहकर संबोधित किया जाता है। हमारी चेतना के अंदर सत, रज और तम- ये तीन प्रकार के गुण होते हैं।

प्रकृति के साथ इसी चेतना के उत्सव को नवरात्रि कहते है। इन 9 दिनों में पहले तीन दिन तमोगुणी प्रकृति की आराधना करते हैं, दूसरे तीन दिन रजोगुणी और आखरी तीन दिन सतोगुणी प्रकृति की आराधना का महत्व है । नवरात्रि माँ के अलग अलग रूपों को निहारने का त्यौहार है। जैसे कोई शिशु अपनी माँ के गर्भ में 9 महीने रहता हे, वैसे ही इन 9 दिन का भी महत्व है जिसमे हम अपने आप में परा प्रकृति में रहकर - ध्यान में मग्न होते है। जब हम वहाँ से फिर बाहर निकलते है तो जीवन में रचनात्मकता और सृजनात्मकता का प्रस्सपुरण आने लगता है। काम, क्रोध, मद, लोभ आदि जितने भी राक्षशी प्रवृत्तियाँ हैं उसका हनन करके हम विजय उत्सव मनाते है। रोजमर्रा की जिंदगी में जो ये मन फँसा रहता है न , उसमें से मन को हटा करके जीवन के जो उद्देश्य व आदर्श को निखारने के लिए यह उत्सव मनाया जाता है। एक तरह से समझा जाय तो हम अपनी बैटरी को रिचार्ज कर लेते है। प्रत्येक व्यक्ति साल भर में जो भी काम करते-करते थक जाता है तो इससे मुक्त होने के लिए इन 9 दिनों में शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि और बुद्धि में शुद्धि प्राप्त कर सत्व शुद्ध हुआ जाता है .

जय माता दी

आधुनिक श्रीराम और आध्यात्मिक श्रीराम में संतुलन साधना नई पीढ़ी की चुनौती

नरेंद्र पाण्डेय

श्रीराम भारतीय परम्परा का अभिन्न हिस्सा हैं। तुलसी के श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और वाल्मीकि के राम मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत संतुलित राम हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपने जीवन में एक-एक मर्यादा का पालना किया , समाज के सम्मुख आदर्श रखे। वे किसी के पुत्र, पिता, भाई, पति, राजा, मित्र तमाम स्वरूपों में मानवीय भावनाओं के संतुलक रहे। राम सिर्फ भारत के ही आदर्श नहीं है बल्कि पूरे विश्व के लिए आदर्श रूप में अनुकरणीय हैं। प्रभु श्रीराम का जीवन आम जीवन से जुड़ा जीवन है, वह सबको चमत्कृत नहीं अपितु आकर्षित करता है। पत्नी के अपहरण पर भी समाज से सहयोग मांगा और संघर्ष किया। तो उसे वापस पाने के लिए मिल-बैठकर नीति बनाई। लंका जाने के लिए एक-एक पत्थर

श्रीराम की प्रतिष्ठा राजनीति से ज्यादा राष्ट्र नीति में निहित है। गंभीर सवाल यही है कि नई पीढ़ी के लिए श्रीराम कैसे हों?

जोड़कर पुल बनाया। एक कुशल प्रबन्धक की तरह लौटे तो पूरी सेना के साथ लौटे, एक साम्राज्य निर्माण की आकांक्षा से लबरेज रामराज की कामना के साथ। राम अगम है सगुण हैं निर्गुण है। श्रीराम के चरित्र में पग-पग पर मर्यादा है, त्याग है, प्रेम है और लोक व्यवहार का साक्षात्कार है। राम मानवता में मथे महापुरुष हैं। राम लोकतंत्र के लोकपाल हैं, सबके प्रेरक हैं और समाज के सह-निर्माता हैं। तभी तो राम के आदर्शों का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव संभव हो पाया है ।

राजनीति के राम जय श्रीराम हैं। समाज और सियासत एक दूसरे के बिना मानो अधूरे हैं और इन भारतीय परिप्रेक्ष्य में राम दोनों जगह विद्यमान हैं. मौजूदा भारतीय नेतृत्व को नए राष्ट्र संगठक श्रीराम की तलाश है। श्रीराम की प्रतिष्ठा राजनीति से ज्यादा राष्ट नीति में निहित है। गंभीर सवाल यही है कि नई पीढ़ी के लिए श्रीराम कैसे हों? क्या नई पीढ़ी का वाल्मीकि के 'श्रीराम' से काम चल जायेगा ? या तुलसी, कबीर और रसखान के 'श्रीराम' से सब काम बन जायेगा। युवा पीढ़ी की आधुनिकता को कितना श्रीराम समर्थित बना पाती है। आधुनिक श्रीराम और

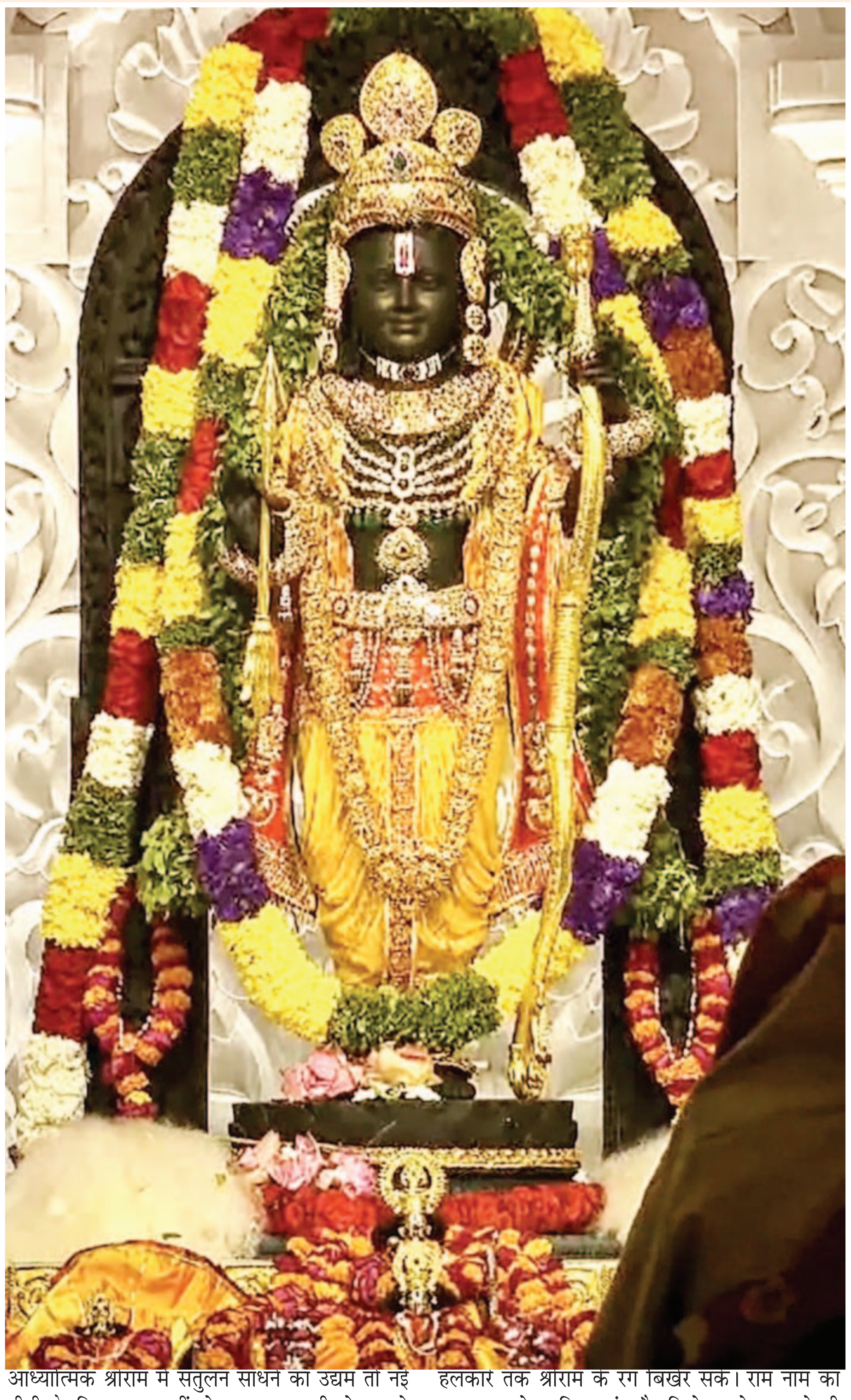

आध्यात्मिक श्रीराम मे संतुलन साधने का उद्यम तो नई पीढ़ी के लिए आज नहीं तो कल करना ही होगा। जो जय श्रीराम के जयकारे से आगे बढ़कर हर दिल के हलकारे तक श्रीराम के रंग बिखेर सकें। राम नाम का जाप एक ऐसा दिव्य मंत्र है, जिसे जपने मात्र से ही तमाम परेशानियां हो दूर हो जाती हैं. यह एक ऐसा मंत्र है, जिसे देवों के देव महादेव भी स्मरण करते हैं. इतना ही नहीं भगवान श्री राम के अनन्य भक्त पवन पुत्र हनुमान भी हमेशा इस मंत्र (जय श्री राम) का जाप करते रहते हैं.

श्रीराम का जीवन चरित्र संघर्ष में भी धीरज देता है। घोर नैराश्य में भी साहस और संयम सिखाता है। श्रीराम एक आदर्श व्यक्तित्व के पूरक हैं। श्रीराम का पूरा जीवन ही संघर्षों और आदर्शों से लबालब है। श्रीराम एक आदर्श पुत्र, पति या भाई ही नहीं हैं अपितु भारतीय समाज के लिए मर्यादा हैं। विनय और विवेक के विनायक हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों और संयम के संवाहक श्रीराम हैं। एक मर्यादित, संयमित और संस्कारित जीवन की जीवंत झांकी हैं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम। श्रीराम का राज्य जन सेवा के लिए नीतिकुशल न्यायप्रिय राजा का है। पारिवारिक मूल्यों के लिए निष्ठावान पीढ़ी के संस्कार वाला जीवन श्रीराम का है। वैवाहिक आदर्शता की पराकाष्ठा को परोसते श्रीराम ने पिता के तीन विवाहों के वातावरण में भी सीता सी सती के लिए वियोगी जीवन संघर्ष जारी रखा। यह श्रीराम ही कर सकते हैं।

श्रीराम का यह पारिवारिक व्यवहारिक जीवन-दर्शन भारतीय समाज की रग-रग में रमता है। उनके आदर्श

श्रीराम का यह पारिवारिक व्यवहारिक जीवन-दर्शन भारतीय समाज की रग-रग में रमता है। उनके आदर्श उत्तर से दक्षिण तक सम्पूर्ण भारतवर्ष के जनमानस में जमें हुए है।

उत्तर से दक्षिण तक सम्पूर्ण भारतवर्ष के जनमानस में जमें हुए है। श्रीराम का तेजस्वी और पराक्रमी स्वरूप भारत राष्ट को रक्षित रखता है। असीम क्षमता और अपार शक्ति वाले श्रीराम संयमित और मर्यादित जीवन जीते हैं। सामाजिक, पारिवारिक, लोकतांत्रिक और आध्यात्मिक आह्वान के साथ लोक कल्याण में रत श्रीराम मानवीय करुणा वाले कर्मवीर हैं।

राम नाम का जाप एक ऐसा दिव्य मंत्र है, जिसे जपने मात्र से ही तमाम परेशानियां हो दूर हो जाती हैं. यह एक ऐसा मंत्र है, जिसे देवों के देव महादेव भी स्मरण करते हैं. इतना ही नहीं भगवान श्री राम के अनन्य भक्त पवन पुत्र हनुमान भी हमेशा इस मंत्र (जय श्री राम) का जाप करते रहते हैं. श्री राम का जीवन-चरित्र भौतिकता से ऊपर है. वे कर्म और भाव को महत्व देते हैं. उनका आचरण धर्म से मर्यादित है. उनके स्नेह की कोई सीमा नहीं है वह सीमातीत हैं. इन्हीं जीवन मूल्यों के आधार पर लेखक अपनी रचना में रामराज्य की बात करते आ रहे हैं तो समाज में भी रामराज्य की स्थापना की बात लगातार होती आ रही है. इन्हीं मूल्यों पर चलकर ही रामराज्य की स्थापना सभी कालों में स्थापित की जा सकती है.

कितने मतलब के होते हैं ये चुनावी घोषणापत्र

जमाना प्रचार का है. कहते हैं कि अगर आप को अपना प्रोडक्ट बेचना आता है तो खराब से खराब सामान भी बिक जा रहा है. किसी क्रीम के लगाने से आप गोरे नहीं हो सकते ये जानते हुए भी गोरा करने की क्रीम सब से ज्यादा बिकती है.बस बेचना आना चाहिए । अगर बेचना आता है तो गंजे को भी कंघा बेचा जा सकता है.

स्वतंत्रता के बाद से देश मे जब से चुनाव हो रहा है सभी राजनीतिक दल अपने अपने घोषणापत्रों के माध्यम से अपनी विचारधाराओं, नीतियों व कार्यक्रमों को मतदाताओं के सामने पेश करते चले आ रहे हैं. हालाँकि आज की तरह पहले इस के लिए कोई खास आयोजन नहीं होता था. पार्टी की एक मीटिंग में चुनावी प्रस्ताव पेश किया जाता था, जिसे ले कर दल में चर्चा होती थी. ये किसी इवैंट की तरह से जनता के सामने पेश नहीं किए जाते थे. 2004 के लोकसभा चुनावों में पहली बार भाजपा की अगुआई वाले राजग और कांग्रेस की अगुआई वाले यूपीए ने अपनेअपने घोषणापत्र जारी किए. यूपीए ने 'मनरेगा' जैसा वादा किया जिस से यूपीए सत्ता में आई और 10 साल सत्ता में रही. इस के बाद केवल लोकसभा चुनाव ही नहीं, विधानसभा चुनावों में भी घोषणापत्र जारी होने लगे. 2012 में उत्तर प्रदेश में

समाजवादी पार्टी विपक्ष में थी. विधानसभा चुनाव के समय उस ने अपने युवाओं को लुभाने के लिए खास किस्म की बात अपने घोषणापत्र में कही कि 2012 के बाद जिन युवाओं ने हाईस्कूल पास किए उन को टेबलेट और जिन्होंने ने 12वीं पास की उन को लैपटौप दिया जाएगा. बेरोजगारों को 1 हजार रुपए प्रतिमाह का बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा. यह वह दौर था जब टेबलेट, लैपटौप और बेरोजगारी भत्ता पाने के लिए होड़ लग गई.

2012 के चुनावी घोषणापत्र का असर यह हुआ कि पहली बार सपा की उत्तर प्रदेश में बहुमत की सरकार बन गई. सरकार बनने के बाद समाजवादी पार्टी अपने वादे पूरे नहीं कर पाई. वह कुछ छात्रों को केवल लैपटौप ही दे पाई. जनता ने घोषणापत्र में लुभावने वादों के सच को समझ लिया. सपा मतदाताओं की नजर से उतर गई. इस के बाद 2022 तक किसी चुनाव में उस को सरकार बनाने लायक जीत हासिल नहीं हो पाई.घोषणापत्रों का असली जालवा और जाल 2014 के लोकसभा चुनावों मे देखने को मिला और जनता लोकलुभावने वादों में वादों में फंसती गई । घोषणापत्र मात्र वोट के लिए मतदाताओं को लुभावने का जरिया बन गया. दिल्ली में आम आदमी पार्टी ने फ्री बिजली और फ्री पानी को ले कर जो वादे किए उन को सरकार बनने के बाद पूरे किए. इस का असर यह हुआ कि आम आदमी पार्टी लगातार वहां विधानसभा चुनाव जीत रही है. 2014 में जब केंद्र में मोदी सरकार बनी तो उसे भी यही समझ आया कि लोकलुभावने वादे करो. जनता को मुफ्त रेवड़ी कल्चर में फंसा दिया. इस में सुप्रीम कोर्ट तक को कहना पड़ा कि यह ठीक नहीं है. इस के बाद भी यह काम जारी है. कोरोनाकाल में 80 करोड लोगों को 'मुफ्त राशन' की चली योजना सालदरसाल आगे बढ़ती जा रही है.

2024 के जून तक यह पूरे देश में लागू है. कोरोनाकाल के बाद जो भी चुनाव हुए, केंद्र सरकार ने 'मुफ्त राशन' को मुददा बनाया. इस को जारी रखा. भाजपा की जीत में यह बड़ा सहायक है. भाजपा ने सरकारी योजनाओं के सहारे जनता में एक अलग 'लाभार्थी वर्ग' तैयार कर लिया है. यह भाजपा का एक बड़ा वोटबैंक हो गया है. इस की पैठ गहरी है. यह वोट देता है. इस को लगता है कि भाजपा सत्ता में नहीं आएगी तो उस को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिलेगा. किसान सम्मान निधि भी इसी तरह की एक योजना है. जनता को यह समझ ही नहीं आ रहा कि यह पैसा उस से ही टैक्स के माध्यम से लिया जा रहा है. इस वजह से ही महंगाई बढ़ रही है.

दोनो ही दलों ने अपने अपने घोषणापत्रों में लोक लुभावनी बातें की हैं. जो कि पूर्णतः मार्केटिंग से प्रेरित हैं. मतदाता न तो इन को पढ़ता है न देखता है. वह इन खबरों को पढ़ कर अपना मोटामोटा नजरिया बना लेता है. जरूरी नहीं कि राजनीतिक दल भी इस का पूरा पालन करते हैं. वे सरकार बनने के बाद चुनावी घोषणापत्र के हिसाब से काम नहीं करते हैं. कभी किसी घोषणापत्र में पिछले की तुलना नहीं होती कि कितना काम इस के अनुसार किया था. मतदाता को वोट देते समय जागरूक होना चाहिए. किसी बात के दबाव या लालच में आ कर वोट नहीं देना चाहिए.

दलबदलू नेताओं को छत्तीसगढ़िया जनता ने हमेशा नकारा है

दलबदलू नेताओं को छत्तीसगढ़िया जनता ने नकारा है। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल होने वाले चिंतामणी महाराज पर सभी की नजरें टिकी है। चिंतामणी महाराज की गिनती सरगुजा संभाग के वरिष्ठ नेताओं में होती है। वर्ष-2013 में चिंतामणी महाराज भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गए थे। तब कांग्रेस ने सरगुजा जिले के लुंड्रा विधानसभा से प्रत्याशी बनाया था। छग में दल बदलकर लोकसभा चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों को मतदाताओं ने कभी भी स्वीकार नहीं किया है। वे चाहे पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की भतीजी करुणा शुक्ला रही हों या कांग्रेस के राष्ट्रीय स्तर के नेता विद्याचरण शुक्ला। विद्याचरण शुक्ल कांग्रेस के कद्दावर और राष्ट्रीय स्तर के नेता माने जाते थे। वर्ष-2000 में राज्य गठन के बाद वे मुख्यमंत्री के दावेदार थे। मुख्यमंत्री नहीं बनाए जाने से नाराज होकर वे शरद पवार की पार्टी राकांपा में शामिल हो गए। फिर वर्ष-2004 में भाजपा में चले गए। भाजपा ने महासमुंद लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने का मौका दिया, लेकिन उन्हें अजीत जोगी से हार का सामना करना पड़ा। जोगी ने एक लाख 18 हजार 500 मतों से जीत हासिल की। ऐसे ही करुणा शुक्ला वर्ष-2004 में जांजगीर लोकसभा सीट से सांसद बनी थीं।इसके अगले चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। इन सबके बीच फरवरी-2014 में शुक्ला ने भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गई। कांग्रेस ने वर्ष-2014 के लोकसभा चुनाव में बिलासपुर से टिकट दी थी, लेकिन उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा था। वे पूर्व मुख्यमंत्री डा रमन सिंह के खिलाफ भी राजनांदगांव विधानसभा से चुनाव लड़ी थीं। कोरोना काल में संक्रमण के दौरान उनकी मौत हो गई थी।लोकसभा चुनाव-2024 में भाजपा ने सरगुजा संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस छोड़कर करीब चार महीने पहले पार्टी में शामिल हुए चिंतामणि महाराज पर सबकी निगाहें टिकी है।

बस्तर का एक राजा जो अब भी पूजा जाता है

राजा प्रवीर चंद्र भंजदेव

हर्षित पाण्डेय

बस्तर देश के सबसे नक्सल–प्रभावित क्षेत्रों में से एक रहा है। दशकों से, खनिज क्षेत्र नक्सलवाद का केंद्र रहा है, जिसने अमन और स्थिरता के साथ विकास कर सकता था। और वह एक अलग पथ चुन सकता था, शांति और स्थिरता के साथ समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकता था। और वह एक आदमी द्वारा हो सकता था, एक व्यक्ति जिसकी पुलिस द्वारा हत्या हुई। बस्तर के राजा, प्रवीर चंद्र भंज देव। IIM, अहमदाबाद के एक एल्यूमनस ने अपने डॉक्यूमेंट्री 'मैं प्रवीर, आदिवासी देव' डॉक्यूमेंट्री को 2021 में SIGN फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित किया गया था। में बस्तर की जनजाति समाज के लोग उन्हे अपना भगवान मानता है, बल्कि उसे यह विश्वास भी है कि यदि 1966 में उनकी हत्या न हुई होती तो बस्तर की सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक विकास और राजनीतिक इतिहास कुछ और होता। बस्तर तब नक्सली आंदोलन का शिकार न होता और न ही जिले के प्राकृतिक संसाधनों का निर्दयता के साथ दोहन होता। शॉर्ट फिल्म बस्तर के भूतपूर्व राजा प्रवीर चंद्र भंजदेव के बारे में बताती है, जिनकी 1966 में पुलिस फायरिंग में मृत्यु हो गई थी। वे अपनी प्रजा के लिए तब की सरकार से लड़ रहे थे। यह राजा और उनकी प्रजा के बीच के रिश्तों के बारे में भी बताती है। प्रवीर चंद्र भंजदेव काकातिया राजघराने की ही एक शाखा के राजा थे, जिन्हें बस्तर के आदिवासी आज भी पूजते हैं और ऐसा मानते हैं कि बस्तर जो भी है उन्हीं के कारण है। फिल्म में आज के बस्तर के आदिवासी अपने राजा को याद करते हुए यहाँ तक कहते हैं कि आज भले ही देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था है पर राजा अपने लोगों और उनकी आकांक्षाओं को अधिक समझते थे।

फिल्म बस्तर के ऐसे लोगों से मिलाती है जो यह मानते हैं कि भले ही लोकतांत्रिक व्यवस्था में विकास हुआ है पर उसका जितना फायदा आदिवासियों को होना चाहिए उतना नहीं हुआ। राजा आदिवासियों के हितों के बारे में अधिक सोचते और समझते थे। यही कारण है कि आदिवासियों के घरों में आज भी राजा प्रवीर चंद्र की फोटो पाई जाती है और ये आदिवासी उनकी पूजा करते हैं। पाँच दशक बीत जाने के बाद भी प्रजा के मन में अपने राजा के लिए जो आदर है वह राजा प्रवीर चंद्र के बारे में बहुत कुछ बताता है। इन स्थानीय आदिवासियों का तो यह मानना है कि यदि पुलिस फायरिंग में उनकी मृत्यु न हुई होती तो बस्तर में नक्सली संघर्ष की शुरुआत नहीं होती।

राजा प्रवीर चंद्र भंजदेव अविभाजित मध्य प्रदेश में जगदलपुर से विधायक भी थे। वे आदिवासियों के हितों को लेकर मुखर भी थे और उनका यह मानना था कि जिले के प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय आदिवासियों का हक़ सबसे अधिक है। आदिवासियों के इन्हीं हितों के लिए वे तत्कालीन सरकार के विरुद्ध खड़े हुए थे। तत्कालीन सरकार के साथ अपनी लड़ाई के दौरान ही 25 मार्च 1966 की रात पुलिस फायरिंग में उनके ही महल में उनकी मृत्य हो गई थी। साथ ही उनके सात समर्थकों की मृत देह मिली थी। इस घटना की एक सदस्यीय जाँच में प्रशासन की आलोचना तो की गई पर घटना के लिए किसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सका था। अविभाजित मध्य प्रदेश में जब यह घटना हुई थी तब द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में कॉन्ग्रेस की सरकार चल रही थी। ये बातें तो इस शॉर्ट फिल्म का हिस्सा हैं जिसमें प्रमुख रूप से एक राजा और उसकी प्रजा, समर्थकों और समाज के बीच के संबंधों को दिखाने का प्रयास किया गया है पर यदि इस फिल्म से हटकर भी देखा जाए तो पुलिस फायरिंग में राजा प्रवीर चंद्र भंजदेव की मृत्यु के पाँच दशक पश्चात आज जब बात होती है तो यही कहा जाता है कि यदि ऐसा न हुआ होता तो नक्सलवाद शायद बस्तर में इस तरह से न पनपता। इस धारणा को अनुमान बताकर भले नकारा जा सकता है पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो बात गलत नहीं लगती। डॉक्यूमेंट्री में व्यक्ति कहते हैं कि बस्तर के राजाओं ने आदिवासी हितों के अनुसार शासन किया। लोगों के घरों में उनकी छवि है, वे उन्हें पूजा करते हैं। उनकी मौत के पाँच दशक बीत गए हैं, हालांकि, वे अभी भी अपने लोगों की यादों में जीते हैं। वह शायद चला गया हो, लेकिन 'हमारे लिए, वह अभी भी बस्तर के राजा हैं।' कुछ लोग लोकतंत्र को सामराज्य से अधिक पसंद करते हैं क्योंकि उनके अनुसार पूर्ववर्ती सरकारें उन्हें अच्छे तरीके से व्यवहार नहीं करती थीं। 'आज के समय के लिए, राजनीतिज्ञ (लोकतंत्र के तहत) ठीक हैं, लेकिन सामराज्य बेहतर था क्योंकि वे लोगों के भावनाओं को समझते थे। वे हमें देखने आते थे, लेकिन आज के राजनेता हमसे केवल वोट के लिए जुड़ते हैं,' एक महिला कहती है। यह एक ऐसी भावना है जो अभी भी व्यापक है। स्थानीय समुदाय के बीच कुछ आपत्ति भी है कि वे क्षेत्र में खनिज और प्राकृतिक संसाधनों के शोषण के रूप में कैसे देखते हैं। हाल के वर्षों में विकास ने लोगों के जीवनायम को सुधारा है, लेकिन इसके फल बराबर नहीं हुआ है। क्षेत्र के आदिवासी लोग मानते हैं कि जो सही रूप से उनका है, उसे उनके जीवन में उचित लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है। पुलिस द्वारा प्रवीर चंद्र की हत्या को माओवादी हिंसा के आउटब्रेक मे महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। अगर प्रवीर चंद्र आज जीवित होते, तो बस्तर का सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक स्तर बिल्कुल अलग होता। उनका अस्तित्व बस्तर को एक सशक्त, विकसित और संतुलित क्षेत्र बनाने की संभावनाएं बढ़ाता। प्रवीर चंद्र ने अपने जीवन में आदिवासी हितों की रक्षा में अपना जीवन समर्पित किया था, और उनका अनुभव और दृष्टिकोण आज भी बहुत मूल्यवान होता। उनकी उपस्थिति से, बस्तर में सुरक्षा, सामाजिक न्याय, और विकास के क्षेत्र में एक नया परिवर्तन आ सकता था। उनकी मृत्यु के बाद, उनकी यादें और उनकी सोच बस्तरीयों के दिलों में अब भी जीवित हैं, और उनका आदर और प्रेम उनके समुदाय के बीच अभी भी महसूस किया जाता है।

यह अनुमान का विषय रहेगा कि पुलिस फायरिंग में राजा प्रवीर चंद्र भंजदेव की मृत्यु न हुई होती तो बस्तर कैसा होता। पर यह ऐतिहासिक घटना बताती है कि केंद्र या राज्य स्तर पर तत्कालीन कॉन्ग्रेस पार्टी का नेतृत्व कैसा था तथा शासन, प्रशासन और समस्याओं को लेकर पार्टी का दृष्टिकोण क्या रहा होगा। लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं को आगे रखकर राजनीति करने वाले पार्टी का लोकतंत्र में विश्वास किस स्तर का था या आज है, वह काफी हद तक देश के सामने है। इसलिए आवश्यकता है कि समय – समय पर ऐसी ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं पर बात हो जिनके बारे में चर्चा की कमी दिखाई देती रही है।

फिल्मों के हिंसक सीन समाज को क्या संदेश दे रहें ...

रोज अखबारों के पन्ने उठा कर देख लीजिए. बर्बर हत्या, रेप, टौर्चर, किडनैपिंग, अत्याचार, साइबर फ्रौड की खबरों से अखबारों के पन्ने भरे मिलेंगे. तो, जब समाज में ये सब हो रहा है तो सिनेमा में इसे नहीं दिखाने से क्या हम समाज को बचा सकेंगे ? कहा जाता है कि फिल्में समाज का आईना होती हैं अर्थात फिल्मों में वही दिखाया जाता है जो समाज में घट रहा होता है. किसी भी दौर की फिल्मों को ध्यान से देखिये तो उस दौर के समाज का पूरा खाका साफ नजर आता है. फिल्मों ने हर वक्त अपने दौर को परदे पर साकार किया है. फिल्में उस दौर की असलियत से भी रूबरू कराती हैं. लेकिन वर्तमान में बन रही फिल्मो को देखकर हमें सवाल अपनेआप से करना चाहिए कि हम किस दिशा में जा रहे हैं ? और ये हमारी फिल्में हमें क्या संदेश दे रही हैं ?

यदि स्वतंत्रता के बाद के 20 सालों का इतिहास को देखे तो ये सपनों, चुनौतियों, आकांक्षाओं और नवनिर्माण का समय रहा. 'आवारा', 'आनंदमठ', 'फुटपाथ', 'दो आंखें बारह हाथ', 'दो बीघा जमीन', 'फिर सुबह होगी', ''श्री 420', 'सीमा', 'मदर इंडिया', 'सुजाता' और 'जिस देश में गंगा बहती है' जैसी फिल्में बनी जिन्हें सराहा गया . 70 के दशक में जब एक तरफ देश का मध्यवर्ग मजबूत हो रहा था, तो व्यवस्था से मोहभंग की शुरुआत भी हो चली थी, तो सामाजिक असंतोष को स्वर देने वाले अभिनेता /नायकों का उदय इसी काल में हुआ था. 'गुड्डी', 'रजनीगंधा' 'परिचय', 'अभिमान', 'चुपकेचुपके', 'आपकी कसम', जैसी मध्यवर्गीय समाज को दर्शाने वाली फिल्में बनीं तो दूसरी तरफ 'जंजीर', 'दीवार', 'त्रिशूल' और 'शोले' जैसी आक्रोश को व्यक्त करने वाली फिल्में भी बनीं. 80 और 90 के दशकों में सामाजिक जीवन में कुछ स्थिरता और शांति आ रही थी. इस दौर में मीठे संगीत वाली प्रेम कहानियां, जैसे 'लव स्टोरी', 'एक दूजे के लिए', 'हीरो', 'कयामत से कयामत तक' 'दिल', 'मैंने प्यार किया' , 'दीवाना', 'बेटा', 'हम आपके हैं कौन', 'खुदा गवाह', 'फूल और कांटे', 'बाजीगर', और 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे जैसी फिल्में खूब चलीं. कुछ हिंसक फिल्में, जैसे 'घायल', 'अग्निपथ', 'थानेदार', 'हम', 'अंगार', जैसी फिल्में भी इसी दौर में बनीं. ये कहीं न कहीं समाज को कुछ संदेश देने वाली फिल्में थीं. 20वीं शदी के शुरुआती सालों में ही 'चक दे इंडिया', 'तारे जमीं पर', 'फैशन', 'लव आजकल' जैसी लीक से हट कर फिल्में बनीं. जिसमें हीरो और हीरोइन दोनों के ही किरदारों में परिवर्तन आया. इसी दौर में कुछ यथार्थवादी और थोड़े विद्रोही स्वर वाली फिल्मे बनी जिनमें 'माय नेम इज खान', 'देल्ही बैली', 'तनु वेड्स मनु', 'थ्री इडियट्स', 'राजनीति', 'आरक्षण', 'रौकस्टार' और 'देसी बौयज' पसंद की गईं. आज का दौर और भी अधिक बदल गया है. लोगों की सोच और रहनसहन में खुलेपन के साथसाथ आज के युवाओं की मानसिकता में भी बहुत बदलाव दिखता है. उन में सहनशीलता और धैर्य नहीं रह गया है. वे तुरंत आक्रोशित हो उठते हैं. वे आवेग और जल्दबाजी में बड़ेबड़े फैसले ले लेते हैं. उन्हें रिजैक्शन सहन नहीं होता. हर बात में मरने मारने को उतारू रहते हैं. प्रेमिका ने ' न ' कहा तो उस की हत्या कर दी. पिता ने पैसे नहीं दिए तो काट डाला. दोस्त से झगड़ा हुआ तो गोली चला दी.

फिल्मों में दिखाए जाने वाले असीमित हिंसा वाले सीन पर हमारे बीच कई लोग चिंतित होंगे. मगर सोचने वाली बात है कि हिंसक कही जाने वाली 'एनिमल' फिल्म इतनी ज्यादा पौपुलर कैसे हुई . कि बहुत कम समय में ही इस की कमाई 800 करोड़ रुपए के आंकड़े को पार कर गई. इस फिल्म को पौपुलर तो हम और आप ने ही तो किया है . सोचिये कि इनका हमारी नई पीढ़ी पर, युवाओं पर, परिवारों पर और समाज पर क्या असर हो रहा है?

कहने का मतलब यह है कि युवाओं का उबलता खून ज्यादा ही हिंसक हो उठा है और आज की फिल्में भी यही सब दिखाती हैं. सेक्स और पैसे की चाह में लोग कुछ भी कर गुजरते हैं. पिछले कुछ वर्षों में सब से ज्यादा कमाई करने वाली फिल्में में 'कबीर सिंह', 'पुष्पा', 'केजीएफ 2', 'पठान', 'जवान', 'गदर 2' और हाल ही में 'एनिमल' शामिल हुई हैं.

फिल्म एनिमल' के कुछ दृश्य मुझे सोचने पर विवश करते हैं. मसलन, जब एक टीनएज लड़का बुली करने वाले क्लासमेट्स को डराने के लिए स्कूल में औटोमैटिक गन ले कर पहुंचता है और हर तरफ खौफ पैदा कर देता है. या फिर वह दृश्य जब एक शख्स हाथ में कुल्हाड़ी ले कर दुश्मनों की भीड़ को काटते चला जाता है. हर तरफ गिरते सिर–हाथ–पैर, बहता खून और लाशों के ढेर दिखाई दे रहे हैं. वही आदमी बंदूक से लोगों के प्राइवेट पार्ट्स पर गोलियां बरसा रहा है. इसी तरह फिल्म में एक आदमी गेस्ट के सामने ही अपनी नईनवेली पत्नी के साथ जबरदस्ती शारीरिक संबंध स्थापित करता है. क्या इस सीन को मैरिटल रेप की कैटेगरी में रखा जा सकता ?.

इस फिल्म के 'प्रेम और हिंसा' में हमारा समाज क्या तलाश रहा है ? 'एनिमल' फिल्म के हिंसक सीन्स के बारे में क्या हम सच में यह कह सकते हैं कि यह रील स्टोरी वाली हिंसा आज के समाज की सच्ची तसवीर दिखा रही है और जो सच है उसे दिखाने में गलत क्या है ? इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि 'एनिमल' जैसी फिल्में समाज का सच दिखा रही हैं. अगर हाल के सालों में हुई हिंसक घटनाओं का विश्लेषण किया जाए तो हम पाते हैं कि तमाम ऐसे अपराध हुए हैं जिन के आरोपी, चाहे किशोर उम्र वाले हों या बड़ी उम्र के, फिल्मों और वैब सीरीज में दिखाए गए सीन को कौपी करते हैं. इन फिल्मों और वैब सीरीज में दिखाए गए हिंसक सीन बच्चों को बेहद प्रभावित कर रहे हैं. उन के व्यवहार में हिंसा की झलक आप भी अपने आसपास महसूस कर सकते हैं.

फिल्मों में दिखाए जाने वाले असीमित हिंसा वाले सीन पर हमारे बीच कई लोग चिंतित होंगे. मगर सोचने वाली बात है कि हिंसक कही जाने वाली 'एनिमल' फिल्म इतनी ज्यादा पौपुलर कैसे हुई . कि बहुत कम समय में ही इस की कमाई 800 करोड़ रुपए के आंकड़े को पार कर गई. इस फिल्म को पौपुलर तो हम और आप ने ही तो किया है . सोचिये कि इनका हमारी नई पीढ़ी पर, युवाओं पर, परिवारों पर और समाज पर क्या असर हो रहा है ?

हमें फिल्मों के इस तरह की हिंसाक दृश्य अजीब नहीं लगते

हम इन्हें स्वीकार्य करते है क्योंकि हम अपने समाज में ऐसा होते देखते रहते हैं. हिंसा हमेशा से ही मनुष्य को आकर्षित करती रही है क्योंकि उस के सबकौन्शियस माइंड में दूसरों के प्रति हावी होने, बलवान दिखने, मजबूत और शक्तिशाली होने का भाव रहता है. लेकिन वह अपने बच्चों को हिंसा से दूर रखना चाहता है . तो हमे बदलना होगा, बच्चों को सिखाने से पहले खुद सीखना होगा. घर और बाहर हिंसक व्यवहार से तोबा करनी होगी. इस तरह की फिल्मों के मुख्य किरदार को अपना रोल मौडल न समझें. प्रेम और रिश्तों के नाम पर हिंसा का जो ये ट्रैंड शुरू हुआ है इसे अपने भीतर हावी न होने दें.

होली -आध्यात्मिक उत्सव

होली शब्द का तीन अर्थ है। पहला अर्थ है हो- ली अर्थात घटित हुआ। जीवन मे अब तक जो भी घटना घटित हुई है। दुख - सुख , वैमनस्यता, कटुता, ईर्ष्या और द्वेष आदि को पवित्र अग्नि में स्वाहा कर देना होली है। दूसरा अर्थ है पवित्रता , जीवन जिसके अंतर्गत काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि को स्वाहा कर खुशहाल जीवन बनाना है। और तीसरा है परमात्मा से हुई दूरी को निकटता में परिवर्तित करना, यानी परमात्मा का हो जाना।

नरेन्द्र पाण्डेय

सच और झूठ की लड़ाई हमेशा से होती रही है. सच को दबाने के लिए झूठ बड़ी बड़ी कोशिश करता है मगर सच एक ऐसी चीज है जो कभी भी छुपता नही है, क्योंकि सृष्टि के शुरुआत से परमेश्वर ही सच थे, जो आज भी हैं और सृष्टि के अंत तक सच ही रहेंगे. परमेश्वर जो प्रकृति में है । प्रकृति जिसमे भिन्नता है , बदलाव के साथ सामंजस्य है। ऐसी ही भिन्नता से बनती है ऋतुएँ और ऋतुओं से मास। मास में एक मास है ,फाल्गुन। जिसमें हर तरफ फूल खिल आते हैं , होती है हर तरफ रंग–बिरंगी बहार । बसन्त ऋतु के अंतिम माह .... फाल्गुन में आता है , हर्षोउल्लास और उत्साह का त्यौहार होली। चूंकि यह हल्की शर्दी और हल्की गर्मी वाला मौसम होता है, ऐसे में हमें कई तरह के वायरस और बैक्टीरिया जनित रोगों का खतरा भी होता है।

होली से एक दिन पहले होलिका जलाना जहां आध्यात्मिक रूप से बुराई के जलने का प्रतीक है, तो वहीं वैज्ञानिक तथ्य के अनुसार आग की गर्मी के कारण पर्यावरण में मौजूद तमाम तरह के बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं। होली शब्द का तीन अर्थ है। पहला अर्थ है हो– ली अर्थात घटित हुआ। जीवन मे अब तक जो भी घटना घटित हुई है। दुख – सुख , वैमनस्यता, कटुता, ईर्ष्या और द्वेष आदि को पवित्र अग्नि में स्वाहा कर देना होली है। दूसरा अर्थ है पवित्रता , जीवन जिसके अंतर्गत काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि को स्वाहा कर खुशहाल जीवन बनाना है। और तीसरा है परमात्मा से हुई दूरी को निकटता में परिवर्तित करना, यानी परमात्मा का होजाना। संतों के अनुसार होली जलाकर हम अपने अंदर की बुराईयों को जलाते है। यह आध्यात्मिक शुद्धि का भी समय है। ऐसा माना जाता है कि होली के दौरान इस्तेमाल किए जाने वाले रंगों में उपचार वाले गुण होते हैं और यह शरीर और दिमाग को शुद्ध कर सकते हैं। लाल रंग पवित्रता और ऊर्जा से जुड़ा है, नीला रंग शांति और सुकून से, हरा रंग सद्भाव और संतुलन से तो पीला रंग ज्ञान और बुद्धिमत्ता से जुड़ा है।

कहा जाता है कि इन रंगों को शरीर पर लगाने से मन और शरीर पर चिकित्सीय प्रभाव पड़ता है। होली के जीवंत रंगों के संपर्क में आने से हमारे मन , शरीर और इंद्रिया आनंद और खुशी का अनुभव करते हैं। हम होली में एक दूसरे पर रंग लगाते है. ये विभिन्न रंग हमारे कपड़ों पर बहुरंगी आकृति बनाते हैं और हम इन आकृतियों को बदलने की कोशिश नही करते, यह हमें सन्देश देता हैं कि हमें अपने जीवन में एक–दूसरे को प्रेमपूर्वक स्वीकार करना चाहिए. ठीक उसी तरह जिस तरह परमपिता–परमेश्वर हम सबको स्वीकार करते हैं.होली का त्योहार एक अनुस्मारक है ।

जिस तरह रंग विलीन हो कर एक हो जाते हैं, उसी तरह विभिन्न जातियों, धर्मों और पृष्ठभूमि के लोगों को भी एक साथ आना चाहिए , सद्भाव से रहना चाहिए। होली माफ करने और भूलने, सभी नकारात्मकता और शिकायतों को दूर करने का संदेश देता है। यह प्यार, खुशी , दोस्ती और भाईचारे के बंधन को मजबूत करने का त्यौहार है। होली आध्यात्मिक शुद्धि का समय है। होली सिर्फ एक त्योहार नहीं है, बल्कि जीवन और आध्यात्मिकता का उत्सव है।

महिला वोटर्स को लुभाने में लगे 'मर्द नेता'

सवाल बनता है कि 75 वर्षों बाद भी ऐसी नौबत क्यों है कि पक्षविपक्ष द्वारा महिलाओं के लिए ऐसे वादे करने पड़ रहे हैं? आखिर क्यों देश की आधी आबादी यानी महिलाओं को लुभाने के लिए चुनावी पार्टियों को तरहतरह के वादे करने पड़ रहे हैं? यह सोचा जा सकता है कि अचानक इन पार्टियों में महिलाओं के प्रति ऐसा रुझान क्यों होने लगा? इस की वजह पिछले एक दशक में महिलाओं के चुनावी भागीदारी में बड़ा बदलाव आना है. महिलाएं सब से बड़ा वोटबैंक बनकर उभरी हैं.

जैसे- जैसे चुनाव नजदीक आ रहे हैं, सभी पार्टियां जीतने के लिए बड़ेबड़े वादे करती जा रही हैं. कांग्रेस ने महिलाओं के लिए 'नारी न्याय गारंटी' का ऐलान किया. जिस में 5 बिंदु रखे गए- 'देश की गरीब महिलाओं को सालाना 1 लाख रुपए की वित्तीय सहायता.' केंद्र सरकार की नई नियुक्तियों में 50 फीसदी महिलाओं को हक. -आंगनवाड़ी, आशा और मिडडे मील वर्कर्स के मासिक वेतन डबल. -हर पंचायत में महिला जागरूकता के लिए कानूनी सहायक की नियुक्ति.-हर जिले में महिलाओं के लिए कम से कम 1 होस्टल. तो भाजपा की तरफ से कहा गया है कि वह जीतने के बाद सभी बीपीएल परिवारों की छात्राओं को केजी से पीजी तक मुफ्त शिक्षा का लाभ देगी. पीएम उज्वला योजना में महिलाओं को 450 रुपये में सिलैंडर दिया जाएगा. 15 लाख ग्रामीण महिलाओं को लखपति योजना के अंतर्गत कौशल प्रशिक्षण दिया जाएगा. एक करोड़ 30 लाख से अधिक महिलाओं को आर्थिक सहायता के साथ आवास का लाभ मिलेगा. बीपीएल परिवारों की लड़कियों को 21 वर्ष तक कुल 2 लाख रुपए का लाभ दिया जाएगा. सवाल बनता है कि 75 वर्षों बाद भी ऐसी नौबत क्यों है कि पक्षविपक्ष द्वारा महिलाओं के लिए ऐसे वादे करने पड़ रहे हैं? आखिर क्यों देश की आधी आबादी यानी महिलाओं को लुभाने के लिए चुनावी पार्टियों को तरहतरह के वादे करने पड़ रहे हैं? यह सोचा जा सकता है कि अचानक इन पार्टियों में महिलाओं के प्रति ऐसा रुझान क्यों होने लगा? इस की वजह पिछले एक दशक में महिलाओं के चुनावी भागीदारी में बड़ा बदलाव आना है. महिलाएं सब से बड़ा वोटबैंक बनकर उभरी हैं. इतना ही नहीं, विधानसभा चुनाव में बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल जैसे बड़े राज्यों में महिलाओं ने पिछले कुछ चुनावों में पुरुषों से अधिक वोट डाले. लोकसभा से ले कर विधानसभा चुनाव तक सभी जगह इन की वोटिंग में 10 से 15 फीसदी तक का भारी इजाफा देखने को मिला है. इसे इन आंकड़ों से समझते हैं- 2014 के लोकसभा चुनाव में पुरुष और महिला मतदाताओं के मतदान प्रतिशत में सिर्फ डेढ़ प्रतिशत का अंतर था, जबकि 2019 में वे पुरुषों से आगे निकल गईं. 2019 के चुनाव में पुरुषों का मतदान प्रतिशत जहां 67.02 था, वहीं महिलाओं का 67.18 प्रतिशत था. इस बढ़ते ट्रेंड और महिलाओं को ले कर हो रही घोषणाओं से ऐसा लग रहा है कि 2024 के चुनाव में महिला मतदाताओं की संख्या पिछली बार की तुलना में ज्यादा होगी. चुनाव आयोग के मुताबिक 2024 के चुनाव में कुल 96.8 करोड़ मतदाता हिस्सा ले सकते हैं. इन में 49.7 करोड़ पुरुष और 47.1 करोड़ महिला मतदाताओं के होने का अनुमान है.

50 फीसदी महिलाएं चुनावी घोषणाएं करने वाली पार्टियों के मुखिया से ले कर संसद में चुने पुरुष नेताओं के रहमोकरम पर हैं

खासकर, ग्रामीण क्षेत्रों में तो इन की संख्या और भी बढ़ी है. आज किसी भी पार्टी की सियासत को ऊपर या नीचे करने में महिला वोटर बड़ी भूमिका निभा रही हैं. कहा जाता है कि मोदी के सत्ता में रहने का एक बड़ा कारण महिलाएं ही हैं. यही वजह भी है कि केंद्र से ले कर राज्य सरकारों में सरकार चला रही पार्टियां महिलाओं के लिए कई खास योजनाएं व घोषणाएं संचालित कर रही हैं. यदि इस का श्रेय 2005 में आए 'मनरेगा' एक्ट व पैतृक संपत्ति पर बेटी के अधिकार और 2009 में मिले शिक्षा के अधिकार जैसे अधिकारों को दिया जाए जिन्होंने महिला उत्थान में बड़ा योगदान दिया तो गलत न होगा, क्योंकि इन अधिकारों ने निचले से निचले वर्ग को छूने की कोशिश की, जिन में दोयम दर्जे में महिलाएं ही थीं. एक तरह से महिलाओं के लिए ये नीतियां संजीवनी बूटी बन कर आईं, जिन्होंने उन्हें राजनीतिक रूप से ज्यादा सजग और अपने हकों के लिए लड़ना सिखाया, उन के हाथों में थोड़ीबहुत आर्थिक शक्ति देने की कोशिश की, सही मानों में आत्मनिर्भर बनाने में योगदान दिया. मगर इस के बावजूद अगर 2024 के चुनावों में महिलाओं के लिए स्पैशल घोषणाएं की जा रही हैं तो जरूर सोचा जा सकता है कि आज भी महिलाएं उस स्तर पर नहीं पहुंच पाई हैं जहां उन्हें होना चाहिए था. आज भी सारी आर्थिक और कानूनी शक्तियां पुरुषों के हाथों में हैं. इस की पुष्टि वर्ल्ड बैंक द्वारा जारी की गई नई रिपोर्ट 'वीमेन, बिजनैस एंड द ला' और उस के आंकड़े भी करते हैं. इस रिपोर्ट ने खुलासा किया है कि कार्यस्थल पर महिलाओं और पुरुषों के बीच का अंतर पहले की तुलना में अधिक व्यापक है. वहीं जब हिंसा और बच्चों की देखभाल से जुड़े कानूनी मतभेदों को ध्यान में रखा जाता है, तो महिलाओं को पुरुषों की तुलना में दोतिहाई से भी कम अधिकार प्राप्त हैं. हैरानी यह कि दुनिया का कोई भी देश ऐसा नहीं है जो इस असमानता से अछूता हो, यहां तक कि दुनिया की समृद्ध अर्थव्यवस्थाएं भी इस अंतर को पाटने में सफल नहीं हो पाई हैं, बाकि भारत में मामला गंभीर है, क्योंकि भारत में लैंगिक असमानता दुनिया के कई देशों के मुकाबले बेहद खराब स्थिति में है. भारत के कामकाजी और शीर्ष पदों पर असमानता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि संसद में महिलाओं की भागीदारी महज 14 फीसदी है. वहीं देश के कुल 119 अरबपतियों की सूची में मात्र 9 महिला अरबपति हैं. देश की कामकाजी महिलाओं की भागीदारी मात्र 23 फीसदी और पुरुषों की 72 फीसदी न होती. यानी, देखा जाए तो 50 फीसदी महिलाएं चुनावी घोषणाएं करने वाली पार्टियों के मुखिया से ले कर संसद में चुने पुरुष नेताओं के रहमोकरम पर हैं

टिकट चाहिए तो वोट की गारंटी दो

मुसलमानों के संदर्भ में बदली है भाजपा की रणनीति

आम चुनाव के लिए भाजपा अब तक 405 सीटों पर उम्मीदवार की घोषणा कर चुकी है. केरल की मल्लपुरम सीट एकमात्र ऐसी सीट है, जहां से पार्टी ने मुस्लिम उम्मीदवार अब्दुल सलाम को उतारा है. कभी पार्टी का मुस्लिम चेहरा रहे शाहनवाज हुसैन, मुख्तार अब्बास नकवी जैसे नेताओं को उम्मीदवारों की सूची में जगह नहीं मिली है. वह भी तब, जब देश की 65 सीटों पर मुस्लिम मतदाताओं की भागीदारी 30 से 65 फीसदी है, तो करीब 35 सीटों पर ये अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराते है.बीते एक दशक में पार्टी में मोदी-शाह युग की शुरुआत के बाद मुसलमानों के संदर्भ में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की रणनीति में बड़ा बदलाव आया है. लगता है कि पार्टी अब वोट की कीमत पर ही इस समुदाय को टिकट देना चाहती है. दो वर्ष पूर्व जब हैदराबाद में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में पीएम नरेंद्र मोदी ने पसमांदा मुसलमानों तक पहुंच बनाने का आह्वान किया, तब एकबारगी लगा कि इस बार पार्टी प्रभाव वाले राज्यों में इस वर्ग मौका देगी.इस आह्वान के बाद पार्टी के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ ने इस वर्ग में पहुंच के लिए बिहार, उत्तर प्रदेश में भाईचारा, सूफी सम्मेलन सहित कई कार्यक्रमों का आयोजन किया था. इस दौरान जब करीब 18 लाख मोदी मित्र बनाये गये, तब उम्मीदवारी में मुसलमानों को मौका मिलने की धारणा को मजबूती मिली थी।

वर्ष 1980 में स्थापना के बाद से ही पार्टी ने मुस्लिम वर्ग के कई चेहरों को महत्व देकर इस वर्ग में पैठ बनाने की कोशिश की. इस वर्ग के नेताओं को बार-बार राज्यसभा और सत्ता मिलने पर सरकार में मौका दिया गया. बावजूद इसके पार्टी इन नेताओं के जरिये इस वर्ग में अपनी पैठ मजबूत करने में नाकाम रही.यहां तक कि साल 2014 में जब मोदी सरकार सत्ता में आयी, तब पहली बार पार्टी ने इस समुदाय के दो नेताओं एमजे अकबर और नजमा हेपतुल्ला को मंत्रिमंडल में जगह दी. हालांकि, पार्टी के सात मुस्लिम उम्मीदवार चुनाव जीतने में असफल रहे थे.साल 2019 के आम चुनाव में भी पार्टी ने मुस्लिम बिरादरी को छह टिकट दिये. सभी उम्मीदवारों की हार के बावजूद मुख्तार अब्बास नकवी को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया. हालांकि बदली रणनीति का अहसास तब हुआ, जब नकवी को राज्यसभा का नया कार्यकाल नहीं मिलने पर आजाद भारत में पहली बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व शून्य हो गया.नयी दिल्ली में सिकंदर बख्त जनता पार्टी के टिकट पर एक बार चांदनी चौक से लोकसभा का चुनाव जीते. भाजपा की स्थापना के बाद इन्हें कई बार राज्यसभा भेजा गया. उन्हीं की तरह आरिफ बेग 1977 और 1989 में लोकसभा चुनाव जीते. कई बार राज्यसभा सदस्य और मंत्री रहे मुख्तार अब्बास नकवी बस एक बार लोकसभा चुनाव जीते. सैयद शाहनवाज हुसैन ही इकलौते मुस्लिम चेहरा हैं, जिन्होंने तीन बार लोकसभा चुनाव में जीत हासिल की है. भाजपा का संकेत साफ है. मुसलमानों में पैठ बनाने के लिए पार्टी दशकों से चली आ रही प्रतीकात्मक राजनीति का सहारा नहीं लेगी. इस वर्ग को उन मुश्किल सीटों पर अपनी प्रासंगिकता साबित करनी होगी, जहां उनके वोट निर्णायक स्थिति में हैं.

पहले कांग्रेस अब बीजेपी का गढ़ बना राजनांदगांव

राजनांदगांव लोकसभा-मैदान में पूर्व सीएम भूपेश बघेल, करा पाएंगे पंजे की वापसी

देश के 543 और छत्तीसगढ़ के 11 लोकसभा क्षेत्र में से एक राजनांदगांव लोकसभा सीट सूबे की एक प्रमुख वीआईपी सीट है. एक तरफ जहां इसबार लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को मैदान में उतारा है तो वहीं बीजेपी ने यहां अपने मौजूदा सांसद संतोष पांडे को मैदान में उतारा है. राजनांदगांव से छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह विधायक चुने गए हैं. इसलिए भी यह सीट खास हो जाता है. 2024 में छत्तीसगढ़ हाई प्रोफाइल सीट बनने जा रहा है और यहां मुकाबल दिलचस्प होने के आसार हैं. चुनाव परिणाम के दिन सभी की निगाहें इस सीट पर टिकी हुई रहेगी. बीजेपी के संतोष पांडे अभी राजनांदगांव को सांसद हैं. बीजेपी यहां लगातार चार बार जीत दर्ज कर चुकी है.

संतोष पांडे ने 2019 में कांग्रेस पार्टी के भोला राम साहू को हराया है. पांडे को जहां 50.68 प्रतिशत मत मिले थे वहीं कांग्रेस के भोला राम साहू को 42.11 वोट मिले. तीसरे स्थान पर रहे बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवार रविता लाकड़ा को 1.31 प्रतिशत वोट मिले थे.

भोला राम साहू को हराया

बीजेपी उम्मीदवार संतोष पांडे ने कांग्रेस के भोला राम साहू को 1,11,966 वोटों से हराया था. बीजेपी के संतोष पांडे को जहां 662,387 वोट मिले थे वहीं कांग्रेस पार्टी के भोला राम साहू को 5,50,421 वोट जबकि तीसरे स्थान पर रहे बीएसपी के रविता लाकड़ा (ध्रुव)को महज 17,145 वोट मिले थे. बीएसपी उम्मीदवार रविता लाकड़ा को नोटा 19,436 से भी कम वोट मिले थे.

2014 में बीजेपी के दूसरी जीत

इससे पहले 2014 में बीजेपी के अभिषेक सिंह ने कांग्रेस के कमलेश्वर वर्मा को 2,35,911 वोटों से हराया था. अभिषेक सिंह को जहां 6,43,473 वोट मिले वहीं कांग्रेस के कमलेश्वर वर्मा को 4,07,562 वोट. तीसरे स्थान पर रहे बीएसपी के आनंद साहू को 20,458 वोट मिले थे. चौथे स्थान पर 20,458 नरेंद्र बंसोड़ को 11704 वोट मिले.तीसरे और चौथे स्थान पर रहे उम्मीदवार को नोटा के 32,385 वोट से कम वोट मिले थे.

राजनांदगांव का चुनावी इतिहास

राजनांदगांव में 1957 में हुए पहले चुनाव में कांग्रेस पार्टी के राजा बहादुर सिंह ने जीत दर्ज की थी. राजा बहादुर सिंह 1962 में कांग्रेस की टिकट पर संसद पहुंचे.1967 में कांग्रेस की पद्मावती देवी और 1971 में रामसहाय पांडे ने जीत हासिल की. 1977 में इमरजेंसी के बाद हुए चुनाव में जनता पार्टी के मदन जीत दर्ज करने में कामयाब हुए. इसके बाद 1980 और 1984 में कांग्रेस के शिवेंद्र बहादुर सिंह जीत दर्ज करने में कामयाब हुए. 1989 में धर्मपाल सिंह गुप्ता ने बीजेपी की टिकट पर जीत दर्ज की. 1991 में एकबारशिवेंद्र बहादुर सिंह सांसद बने. 1996 में बीजेपी के अशोक शर्मा, 1998 कांग्रेस के मोतीलाल बोरा. 1999 में बीजेपी के डॉ. रमन सिंह. 2004 में बीजेपी के प्रदीप गांधी, 2009 में बीजेपी के मधुसूदन यादव ने जीत दर्ज की.

राजनांदगांव का वोट गणित

राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र आठ विधानसभा- डोंगरगांव, मोहला-मानपुर, डोंगरगढ़, खैरागढ़, खुज्जी, पंडरिया, कवर्धा और राजनांदगांव है. राजनांदगांव में कुल 17,16,459 मतदाता है. इनमें 8,57,304 जबकि महिला मतदाताओं की संख्या 8,59,149 है. यहां थर्ड जेंडर निर्वाचक 6 है. 2019 में हुए विधानसभा चुनाव में यहां कुल मतदान प्रतिशत- 76.15त्न. बात जातिगत समीकरण की करें तो राजनांदगांव लोकसभा सीट पर पिछड़ा व र्के वोटर निर्णायक है वहीं साहू समाज के भी वोट भी जीत हार तय कर सकते हैं. साहू समाज के करीब 5 लाख से ज्यादा वोटर हैं.

मां बम्लेश्वरी का विश्व प्रसिद्ध मंदिर

राजनांदगांव का इतिहास गौरवशाली रहा है. इसे छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी कहा जाता है. यहां स्थित एशिया का पहला और एकमात्र संगीत विश्वविद्यालय इंदिरा कला एवं संगीत विवि के नाम से खैरागढ़ की पूरी दुनिया में विशेष पहचान है. डोंगरगढ़ में मां बम्लेश्वरी का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है। वहीं पर बौद्ध धर्म के अलावा जैन धर्म का भी बड़ा धार्मिक स्थल भी है.

2 हजार करोड़ के शराब घोटाले में मनी लॉन्ड्रिंग केस रद्द

रायपुर। सुप्रीम कोर्ट ने छत्तीसगढ़ में हुए शराब घोटाले मामले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस को रद्द कर दिया है। दो हजार करोड़ के शराब घोटाले केस में सभी 6 आरोपियों ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद राहत की सांस ली है। पूर्व आईएएस अधिकारी अनिल टुटेजा और उनके बेटे यश टुटेजा को मनी लॉन्ड्रिंग मामले से बड़ी राहत दी है। इस केस में सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई।

जस्टिस अभय एस औका और जस्टिस उज्जल भुइयां की बेंच ने मामले में टिप्पणी करने के बाद शिकायत को खारिज कर दिया है। उच्चतम न्यायालय ने छत्तीसगढ़ शराब घोटाले से संबंधित मामले में आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग के मामले को यह कहते हुए रद्द कर दिया कि शिकायत आईटी अधिनियम अपराध पर आधारित थी, जो धन शोधन निवारण अधिनियम के अनुसार अपराध नहीं है।

कोर्ट ने कहा कि मामले में ईसीआईआर और एफआईआर को देखने से पता चलता है कि कोई विधेय या अपराध नहीं हुए हैं। सवोच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि जब कोई आपराधिक धनराशि ही नहीं है तो इसमें मनी लॉन्ड्रिंग का केस ही नहीं बनता है।

जानें क्या हैं दो हजार करोड़ का शराब घोटाला

ईडी की जांच के मुताबिक, पूर्व कांग्रेस सरकार में उच्च स्तरीय अधिकारियों, निजी व्यक्तियों और राजनीतिक अधिकारियों वाला एक सिंडिकेट काम कर रहा था। छत्तीसगढ़ में शराब व्यापार में बड़े पैमाने पर घोटाला किया गया। साल 2019-22 में दो हजार करोड़ रुपये से अधिक काले धन की कमाई हुई। मनी लॉन्ड्रिंग मामला 2022 में दिल्ली की एक अदालत में दायर आयकर विभाग की चार्जशीट से उपजा है। पूर्व की कांग्रेस सरकार पर आरोप है कि सीएसएमसीएल (शराब की खरीद और बिक्री के लिए राज्य निकाय) से शराब खरीदने के दौरान रिश्वतखोरी हुई।

संपादकीय

चुनाव में भाषा का संयम एवं वचनों की मर्यादा जरूरी

लोकसभा चुनावों जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे हैं, कई नेताओं की जुबान फिसलती जा रही है, वे राजनीति से इतर नेताओं की निजी ज़िंदगियों में तांक-झांक वाले, धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले ऐसे बोल बोल रहे हैं, जो न सिर्फ़ आपत्तिजनक हैं, बल्कि राष्ट्र-तोड़क है। चुनावी रैलियों में जनता के सामने अपने प्रतिद्वंद्वी को नीचा दिखाने के मकसद से ये नेता मर्यादा, शालीनता और नैतिकता की रेखाएं पार करते नज़र आए हैं। गलत का विरोध खुलकर हो, राष्ट्र-निर्माण के लिये अपनी बात कही जाये, अपने चुनावी मुद्दों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाये, लेकिन गलत, उच्छृंखल एवं अनुशासनहीन बयानों की राजनीति से बचना चाहिए। बड़ा सवाल है कि एक ऊर्जावान एवं दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में क्या वाकई अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल औचित्यपूर्ण है? चुनाव की तारीख तय होने एवं चुनावी पारा बढ़ने के बाद नेताओं के बयानों में तीखापन एवं हल्कापन आ गया है। एक तरफ गर्मी चुभन का अहसास करा रही है, तो दूसरी तरफ राजनीतिक हलकों में भाषायी अभद्रता एवं उच्छृंखलता घाव पर नमक छिड़क रही है। नेताओं को यह बात समझनी चाहिए कि सही तरीके से बोले गए शब्दों में लोगों को जोड़ने की ताकत होती है, जबकि गलत भाषा एवं बोल का इस्तेमाल राजनीतिक धरातल को कमजोर करता है।

हमारे देश की राजनीति में संयमित भाषा एवं अनुशासित बोल-बयान एक महत्वपूर्ण अंग होती है। लोकतंत्र में उसी नेता का बोल-बाला होता है, जिसकी भाषा एवं वचनों पर पकड़ मजबूत होती है। आजादी के बाद देश में जिस प्रकार राजनीति में बदलाव आता गया, उसी प्रकार राजनेताओं की भाषा और आरोप-प्रत्यारोप की शैली भी बदलती गई। आज कुछ राजनीतिक दलों के नेता अपने विपक्षी राजनेता को 'पप्पू' जैसे शब्दों से ताना मारते हैं, तो कोई विपक्षी नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिये चौकीदार चोर है या चायवाला जैसे शब्दों का प्रयोग करता रहे हैं। क्या हमारे देश की राजनीति में मर्यादा नाम का कोई शब्द बचा है? ऐसी अभद्र भाषा का उपयोग करने से पहले हमारे ये राजनेता जरा भी नहीं सोचते कि उसका उनकी पार्टी पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

भारतीय राजनीति में स्तरहीन, हल्की और सस्ती बातें कहने का चलन काफी समय से है। लेकिन पिछले दो दशकों में यह वीभत्स रूप धारण कर चुका है। उस समय जब राम मनोहर लोहिया ने इंदिरा गांधी को गूंगी गुड़िया कहा था तो काफी विवाद हुआ और बड़ी तादाद में लोगों ने लोहिया का विरोध किया। कांग्रेस के अध्यक्ष खड़गे भी काफी कुछ बोल चुके हैं और उनका पीएम मोदी के लिए रावण वाला बयान काफी चर्चा में रहा है। लेकिन सबसे ज्यादा हल्की बात कहते हैं मणिशंकर अय्यर। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के लिए बहुत ही सस्ते शब्दों का इस्तेमाल किया। उन्होंने तो नीच, कातिल जैसे शब्दों का खुलेआम इस्तेमाल किया था जिसमें उनकी हताशा साफ झलकती है। कड़वे एवं गलत बयानी के मामले में कांग्रेसियों की तो सूची काफी लंबी है। चाहे वह अधीर रंजन हों या दिग्विजय सिंह या फिर संजय निरुपम और प्रियंका गांधी। आम आदमी पार्टी के नेता एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने तो सारी हदें पार कर दी। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने ईवीएम की निंदा 'चोर' के रूप में की थी। सभी ने मौका देखकर बेहद हल्के शब्दों का इस्तेमाल किया, जिससे उनकी खीझ एवं बौखलाहट का पता चलता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि मोदी और उनकी पार्टी ने ऐसे अमर्यादित शब्दों और टिप्पणियों को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल किया। उन्होंने अपने करोड़ों समर्थकों के सामने इन शब्दों और उन्हें बोलने वालों के खिलाफ माहौल बना दिया। नरेन्द्र मोदी को चाय वाला कहकर उनका उपहास उड़ाने वाले विपक्षियों को तो उन्होंने अपने कार्यों और उपलब्धियों से आईना दिखा दिया। आज चाय वाला शब्द मेहनतकश लोगों के सम्मान का प्रतीक बन गया है। मतदाताओं को आकर्षित एवं अपने पक्ष में करने के फेर में राजनीति को रसातल में धकेलने की मानो होड़ मची हुई है। क्षणिक रोमांच एवं तत्काल चुनावी लाभ के लिए मर्यादा को तार-तार करने वाले इन नेताओं को आत्म-चिंतन की सख्त जरूरत है। मर्यादित भाषा में विभिन्न दलों और नेताओं की आलोचना इस देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को खूबसूरती है। भाषा की मर्यादा और वाणी में संयम भारत के लोकतंत्र का आधार है।

राम शब्द सत्य, शौर्य, दया, तप और त्याग का वाचक है

सुरेंद्र अग्निहोत्री

विश्व महानायक राम का नाम युगो-युगो से जन के मन पर छाया हुआ है। राम का नाम चिरंजीवी रहेगा तथा अपनी गरिमा के समस्त वैभवों से विश्व मानस को संत अर्पण प्रदान करता रहेगा। सचमुच राम का नाम कल्पवृक्ष है। वाल्मीकि ने राम पर काव्य रचना की और आदिकवि की संज्ञा प्राप्त कर अमर हो गए। आचार्य रविषेण, आचार्य गुणभद्र, आचार्य विमलसूरि तथा स्वयंभू और पम्प ने एक से एक उत्तम भाव प्रवण पुराण एवं काव्य साहित्य में रामचरित लिखे हैं। संस्कृत के स्वतंत्र महाकवियों तथा मैथिलीशरण गुप्त ने राम पर काव्य रचना की है। एक हजार से अधिक दुनिया भर की विविध भाषाओं में राम की गाथा को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि काल की समस्त सत्ता को ललकार कर और विस्मृति के संपूर्ण उत्पादनों को निरस्कृत कर राम का यह अद्भुत चरित्र लोक मानस में प्रतिक्षण नवीन होकर चिरजीवी हो रहा है। श्रीराम का चरित्र वस्तुतः साकार और निराकार, निर्गुण एवं सगुण, अलख तथा लख, अव्यक्त एवं व्यक्त परमेश्वर 'ब्रह्म' का संशयरहित आभामय साकार प्रकटीकरण ही है। गोस्वामी तुलसीदास ने परमेश्वर के इन दोनों शाश्वत स्वरूपों का अत्यन्त स्पष्ट और पुष्ट रेखांकन प्रभु श्रीराम के अवतार वर्णन में किया है।

ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद। सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या कें गोद।।

सनातन धर्म में निर्गुण और सगुण तथा निराकार एवं साकार परमेश्वर के भ्रम का निराकरण मजबूत आध्यात्मिक तर्कशक्ति से किया गया है और यह निराकरण इस धर्म की विशाल वैचारिक पृष्ठभूमि एवं उदारता के साथ इसकी अद्भुत विलक्षण विशेषता भी कही जा सकती है। तत्वतः निराकार परमेश्वर ही भक्तों के प्रेमवश उसके कल्याण हेतु साकार रूप में प्रकट होते हैं।

अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।

निराकार 'ब्रह्म' भक्तों के प्रेमवश तो साकार स्वरूप में प्रकट होते ही हैं लेकिन वह परमेश्वर लोकरक्षा के लिए भी साकार रूप ग्रहण करते हैं एवं विविध अवतार के माध्यम से अपनी मनोरम लीला के साथ विभिन्न कालखण्डों में इस लोक में अवतरित होते रहते हैं।

समय प्रबंधन का महत्तव समझें

डा. वरिंदर भाटिया

पहली बात यह समझ लेनी है कि हमें समय का प्रबंधन नहीं करना है, बल्कि उपलब्ध समय के अनुसार अपना प्रबंधन करना है। दूसरी बात यह समझ लेनी चाहिए कि सीमित समय में आप जितने काम कर लेना चाहते हैं, वे कभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं होंगे, इसलिए एक तरह के अधूरेपन को झेलने की, उसके साथ जीने की आदत आपको विकसित करनी ही होगी। तीसरी बात यह है कि अगर आप एक साथ बहुत कुछ साधने की कोशिश करेंगे, तो पूरा खतरा है कि आप कुछ भी नहीं साध पाएंगे। जब तक आपके प्रयास 'फोकस्ड' नहीं होंगे, तब तक सफलता आपके नजदीक भी नहीं फटकेगी। कहा भी गया है कि 'एक साधे सब सधै, सब साधे सब जाय'

एक शिक्षक होने के नाते और शैक्षिक प्रबंधन में एक लंबा अनुभव हासिल करने के बाद मैंने पाया कि टाइम मैनेजमेंट यानी समय प्रबंधन ठीक न होने के कारण मानसिक अवसाद का शिकार हो जाते हैं। इस बिंदु पर बात करना वृहद सामाजिक हित में महसूस हो रहा है। अगर आप दुनिया का इतिहास टटोलेंगे तो आपको कुछ ऐसे उदाहरण जरूर मिल जाएंगे जिन्हें प्रकृति या ईश्वर ने बहुत कम समय दिया, किंतु उसके बावजूद उन्होंने कुछ ऐसा कर दिखाया जो बाकी लोग उनकी तुलना में पर्याप्त समय होने के बाद भी नहीं कर सके। शहीद भगत सिंह जी 23 वर्ष की उम्र में कई गहरी किताबें लिखकर देश के लिए अपनी जिंदगी कुर्बान कर गए, जबकि अधिकांश नौजवान इस उम्र तक यह भी तय नहीं कर पाते कि उनको जीवन में क्या करना है। शंकराचार्य जी को सिर्फ 32 वर्षों का जीवन मिला, किंतु वे उसी अवधि में अद्वैत वेदांत की ऐसी व्याख्या कर गए जिसे खारिज करने में बाकी दार्शनिक खुद को आज तक असमर्थ पाते हैं। पश्चिम के प्रसिद्ध रोमांटिक कवि कीट्स को सिर्फ 25 साल की जिंदगी मिली तो शेली को सिर्फ 29 साल की, पर तब भी अंग्रेजी की रोमांटिक कविता में जितना सम्मान इन कवियों को मिलता है, उतना पूरी शताब्दी जीने वालों को भी नहीं। सार यह है कि कुछ बड़ा करने के लिए बहुत लंबी जिंदगी की जरूरत नहीं होती, जिंदगी के एक-एक क्षण को ठीक से जीने और निचोड़ लेने की जरूरत होती है। ऐसे और भी हजारों उदाहरण हैं। मैं कुछ ऐसे विद्यार्थियों को जानता हूं जिन्होंने कोई नौकरी करते हुए सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की और इसके बावजूद सफलता हासिल की, जबकि दूसरी ओर ऐसे हजारों उम्मीदवार हैं जिन्हें उनके घर से बेहतरीन सुविधाएं मिलती हैं, बिना किसी तनाव के 24 घंटे पढ़ने का मौका मिलता है, लेकिन तब भी उनकी सफलता दर उन लोगों से कम दिखती है जो नौकरी करते हुए तैयारी कर रहे थे। इसका प्रमुख कारण यह है कि नौकरी करने वाले व्यक्तियों को एक-एक क्षण की कीमत का एहसास होता है।

कई लोगों के साथ यह परेशानी होती है कि वे कुछ काम करने की सोचते हैं, दिन के खत्म होने तक वो बहुत से काम करते हैं, लेकिन वो काम नहीं कर पाते हैं जिसके बारे में वे सोचकर रखते हैं। इसके पीछे का सबसे बड़ा कारण ही टाइम मैनेजमेंट का न होना है। टाइम मैनेजमेंट आपको कई चीजें सिखाता है और आपके लिए कई चीजें आसान भी बना देता है। हमारे पास सीमित समय ही होता है, जिसमें से हमें यह पता होना चाहिए कि कौनसा काम प्रोडक्टिव है और कौनसा नहीं। आपको वो काम करना सबसे जरूरी है जिसको करने के बाद आपके अंदर कुछ प्रोडक्टिविटी आए। समय प्रबंधन करना भी एक व्यक्ति का कौशल हो सकता है। यदि आप टाइम मैनेजमेंट के गुण में महारत हासिल कर

लेते हैं, तो आपको फिर कभी ऐसा महसूस नहीं होगा कि आपका समय 'सीमित' है। आपको ऐसा महसूस होगा जैसे सब कुछ ठीक हो रहा है, आपके पास एक दिन में अपनी जरूरत की हर चीज को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय है। समय प्रबंधन को आम तौर पर गतिविधियों को व्यवस्थित करने, प्राथमिकता देने और योजना बनाने की प्रक्रिया को कहा जाता है। इसका मतलब सिर्फ काम पर आपकी परियोजनाएं ही नहीं हैं, बल्कि आपके व्यक्तिगत जीवन में भी टाइम मैनेजमेंट जरूरी है। जिस तरह से आप अपने घर का प्रबंधन करते हैं, उससे लेकर अपने व्यक्तिगत विकास और रचनात्मक शौक तक सब जगह टाइम मैनेजमेंट जरूरी है। बुर्जबर्ग विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा छात्रों के एक समूह पर किए गए 2014 के एक अध्ययन से पता चला है कि आप अपना समय कैसे व्यतीत करते हैं, इसे नियंत्रित करने से कथित तनाव और चिंता को कम करने में मदद मिलती है।

समय प्रबंधन प्रशिक्षण के दो और चार सप्ताह में, छात्रों ने तनाव की भावनाओं में कमी देखी थी। उचित समय प्रबंधन के साथ, व्यक्ति काम और आधुनिक जीवन की मांगों से परेशान होने की भावना को दूर कर सकते हैं और सीख सकते हैं कि इसे कैसे कम किया जाए। काम, परिवार और पर्सनल लाइफ के बीच स्वस्थ संतुलन बनाए रखने के लिए समय प्रबंधन आवश्यक है। यह आपको अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए समय निकालने, थकान से बचने और आपके मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है। बहुत सारे लोग टाइम मैनेजमेंट इसलिए नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें अपनी क्षमताओं और जिम्मेदारियों का सही अंदाजा नहीं होता। क्षमता और कौशल से अधिक काम हाथ में ले लेना आपको अव्यवस्थित कर सकता है, जिससे आप बेवजह तनाव में आ सकते हैं। इसलिए अपने डेली रूटीन और वर्क स्पीड का विश्लेषण कर यह तय करें कि आप कितने घंटे में कितना और कैसा काम कर सकते हैं। टाइम मैनेज करने के लिए, कुछ टिप्स हैं, अपने छोटे और बड़े लक्ष्यों को परिभाषित, उन्हें समझें एवं जानें। यह स्पष्टता आपकी गतिविधियों का मार्गदर्शन करेगी और आपको कार्यों को प्राथमिकता देने में मदद करेगी। अपने उन कामों की पहचान करें जो सबसे ज्यादा जरूरी हैं और समय के प्रति संवेदनशील हैं। ऐसे काम जिनकी जरूरत ज्यादा नहीं है, उन कामों पर ध्यान देने से पहले उच्च प्राथमिकता वाली वस्तुओं पर ध्यान दें। विभिन्न गतिविधियों के लिए विशिष्ट समय ब्लॉक बनाएं। इससे आप एक दैनिक या साप्ताहिक शेड्यूल बनाने में सक्षम हो सकते हैं। हर काम के लिए, ऐसे समय को चुनें जिसे आप उस समय पर पूरा कर सकते हैं, न कि सिर्फ शेड्यूल बनाने के लिए तैयार करें। बड़े कार्यों को छोटे, अधिक प्रबंधनीय चरणों में विभाजित करें।

इससे काम का बोझ कम लगता है और लगातार आप आगे बढ़ते रहते हैं। अगर आप काम को विभाजित नहीं करें और एक समय में दो या उससे अधिक काम करना चाहेंगे तो शायद आप एक भी काम समय पर खत्म नहीं कर पाएंगे। समय प्रबंधन के गुर सीखने के लिए सबसे पहले कुछ गलतफहमियों को दिमाग से हटाना जरूरी है। पहली बात यह समझ लेनी है कि हमें समय का प्रबंधन नहीं करना है, बल्कि उपलब्ध समय के अनुसार अपना प्रबंधन करना है। दूसरी बात यह समझ लेनी चाहिए कि सीमित समय में आप जितने काम कर लेना चाहते हैं, वे कभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं होंगे, इसलिए एक तरह के अधूरेपन को झेलने की, उसके साथ जीने की आदत आपको विकसित करनी ही होगी। तीसरी बात यह है कि अगर आप एक साथ बहुत कुछ साधने की कोशिश करेंगे, तो पूरा खतरा है कि आप कुछ भी नहीं साध पाएंगे। जब तक आपके प्रयास 'फोकस्ड' नहीं होंगे, तब तक सफलता आपके नजदीक भी नहीं फटकेगी। कहा भी गया है कि 'एक साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।' छात्रों के साथ-साथ अन्य लोगों को भी समय प्रबंधन सीख लेना चाहिए।

भारतीय अर्थव्यवस्था लम्बी छलांग लगाने को तैयार

प्रह्लाद सबनानी

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास के चलते भारत में विभिन्न क्षेत्रों में श्रमिकों, व्यवसाइयों, प्रबंधकों, कृषकों आदि की उत्पादकता में भी सुधार दृष्टिगोचर है जो निश्चित ही भारत में आर्थिक विकास की गति को तेज करने में सहायक होगा।

वित्तीय वर्ष 2023-24 की तृतीय तिमाही (अक्टोबर-दिसम्बर 2023) में भारत में आर्थिक विकास की दर 8.4 प्रतिशत रही है। कुछ विदेशी अर्थशास्त्री भारत की आर्थिक विकास दर को कमतर आंकते हुए दिखाई दे रहे हैं जबकि यह लगातार तिमाही दर तिमाही आगे बढ़ती ही जा रही है। अब तो विश्व की कई आर्थिक एवं वित्तीय संस्थानों ने भी वर्ष 2024 के लिए भारत की आर्थिक विकास दर के सम्बंध में अपने अनुमानों को बेहतर किया है, परंतु अभी भी इन संस्थानों के यह अनुमान वास्तविक आर्थिक विकास दर की तुलना में बहुत कम हैं। दरअसल, विदेशी आर्थिक एवं वित्तीय संस्थानों द्वारा विशेष रूप से भारत की आर्थिक विकास दर को आंके जाने के सम्बंध में उपयोग किए जा रहे मॉडल अब बोथरे साबित हो रहे हैं। हाल ही के समय में भारत के नागरिकों में 'स्व' का भाव विकसित होने के चलते देश में धार्मिक पर्यटन बहुत तेज गति से बढ़ा है। उदाहरण के लिए अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर में श्रीराम लला के विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात प्रत्येक दिन औसतन 2 लाख से अधिक श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे हैं। यह तो केवल अयोध्या की कहानी है इसके साथ ही काशी विश्वनाथ मंदिर, उज्जैन में महाकाल लोक, जम्मू स्थित वैष्णो देवी मंदिर, उत्तराखंड में केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री एवं यमनोत्री जैसे कई मंदिरों में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ रही है। भारत में धार्मिक पर्यटन में आई जबरदस्त तेजी के बदौलत रोजगार के लाखों नए अवसर निर्मित हो रहे हैं, जो देश के आर्थिक विकास को गति देने में सहायक हो रहे हैं। परंतु, यह तथ्य विदेशी आर्थिक एवं वित्तीय संस्थानों को दिखाई नहीं दे रहा है, जो कि केवल भारत की ही विशेषता है।

उक्त तथ्यों के अतिरिक्त अन्य कई कारक भी भारत की आर्थिक विकास दर को अब 9 से 10 प्रतिशत की सीमा में ले जाने को तैयार दिखाई दे रहे हैं। आज भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना में भारत से आगे चल रही विश्व के अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर में ठहराव आ गया है। जैसे अमेरिका एवं यूरोप की अर्थव्यवस्थाएं आगे आने वाले समय में प्रतिवर्ष केवल 2 अथवा 3 प्रतिशत की दर से ही आगे बढ़ पाएंगी। इसी प्रकार चीन की अर्थव्यवस्था भी अब ढलान पर दिखाई दे रही है। जापान एवं जर्मनी की अर्थव्यवस्थाओं में तो आर्थिक मंदी देखी जा रही है। इस प्रकार विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत के अमृत काल में केवल भारतीय अर्थव्यवस्था ही तेज गति आगे बढ़ती दिखाई दे रही है। वैसे भी भारत में अमृत काल तो अभी शुरू ही हुआ है एवं यह अगले 23 वर्षों अर्थात वर्ष 2047 तक यह खंडकाल जारी रहेगा। कुछ अर्थशास्त्री तो भारत के अमृत काल के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था के इसी तरह तेज गति से आगे बढ़ते रहने की संभावनाएं व्यक्त कर रहे हैं क्योंकि भारत में वर्ष 1991-92 में प्रारम्भ किए आर्थिक एवं वित्तीय क्षेत्र के सुधार कार्यक्रम को अब 32 वर्ष पूर्ण हो गए हैं, हालांकि वर्ष 1991-92 के बाद भी भारत में आर्थिक एवं वित्तीय क्षेत्रों में सुधार कार्यक्रम लगातार जारी रहे हैं। अतः स्थिर हो चुके इन सुधार कार्यक्रमों के फल खाने का समय अब आ गया है।

भारत द्वारा वर्ष 1947 में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, पिछले 77 वर्षों के दौरान भारत में लोकतंत्र लगातार मजबूत हुआ है एवं आज पूरे विश्व में भारत इस दृष्टि से प्रथम पायदान पर खड़ा है। भारत में लोकतंत्र के लगातार मजबूत होते जाने से विदेशी निवेशकों का भारत में विश्वास बढ़ा है जिसके चलते भारत में उद्योग जगत को पूंजी की कमी नहीं के बराबर रही है। पर्याप्त पूंजी की उपलब्धता के चलते भारत में आर्थिक विकास को गति ही मिली है। भारत में लगातार तेज हो रही आर्थिक विकास की दर के कारण भारत में बिलिनियर (100 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की सम्पत्ति वाले नागरिक) की संख्या में सुधार हुआ है। पिछले वर्ष भारत में 94 नए बिलिनियर बने हैं। जबकि चीन में 115 बिलिनियर कम हुए हैं। विश्व में बिलिनियर की संख्या के मामले में भारत चीन एवं अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर आ गया है। भारत में आज 271 बिलिनियर हैं जबकि चीन में 814 एवं अमेरिका में 800 बिलिनियर हैं। मुंबई महानगर में तो अब 92 बिलिनियर निवास कर रहे हैं, जो चीन के बीजिंग महानगर के 91 बिलिनियर से अधिक है। इस प्रकार अब एशिया के किसी भी महानगर में सबसे अधिक बिलिनियर भारत के मुंबई महानगर में निवास कर रहे हैं। पूरे विश्व भारत के मुंबई महानगर से आगे अब केवल अमेरिका का न्यूयॉर्क महानगर (119 बिलिनियर) एवं ब्रिटेन का लंदन महानगर (97 बिलिनियर) ही है। वर्ष 2022-23 में चीन में बिलिनियर की संख्या घटी है। चीन में बिलिनियर की सम्पत्ति 15 प्रतिशत से कम हुई है। जबकि भारत में बिलिनियर की सम्पत्ति में वृद्धि दर्ज हुई है। यह भारत में तेज गति से हो रहे आर्थिक विकास दर के चलते सम्भव हो सका है।

एक और कारक जो आगे आने वाले समय में भारत की आर्थिक विकास दर को लगातार उच्च स्तर पर बनाए रखने में सहायक हो सकता है वह है भारत में प्रति व्यक्ति वार्षिक औसत आय का लगभग 2500 अमेरिकी डॉलर का होना है जो चीन में 13,000 से 14,000 अमेरिकी डॉलर के एवं दक्षिणी कोरिया में 32,000 से 33,000 अमेरिकी डॉलर के बीच की तुलना में बहुत कम है। इस दृष्टि से भारत को अभी बहुत आगे तक जाना है और यह केवल आर्थिक विकास की औसत दर को 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष के आसपास बनाए रखने से ही सम्भव होगा। इस प्रकार भारतीय नागरिकों की अपनी औसत आय को विकसित देशों की तुलना में बेहतर करने की अभी बहुत गुंजाइश है और यह भावना भारत की आर्थिक विकास दर को बढ़ाए रखने में सहायक होगी। दूसरे, भारत में तकनीकी क्षेत्र विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास की दर बहुत प्रभावकारी है, डिजिटल क्षेत्र में तो भारत आज पूरे विश्व को ही राह दिखाता नजर आ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास के चलते भारत में विभिन्न क्षेत्रों में श्रमिकों, व्यवसाइयों, प्रबंधकों, कृषकों आदि की उत्पादकता में भी सुधार दृष्टिगोचर है जो निश्चित ही भारत में आर्थिक विकास की गति को तेज करने में सहायक होगा।

आज अमेरिका एवं कनाडा में निवासरत एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्य कर रहे भारतीय मूल के नागरिक वापिस भारत आकर बसने के बारे में गम्भीरता से विचार कर रहे हैं क्योंकि अब अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों की तुलना में भारत में लगातार तेज हो रही आर्थिक विकास की दर उन्हें आकर्षित कर रही है। उन्हें आज भारत में अधिक आय अर्जन के अतिरिक्त साधन उत्पन्न होते दिखाई दे रहे हैं। एक सर्वे के अनुसार, लगभग 38,000 भारतीय जो अमेरिका में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत हैं वे अब भारत वापिस आना चाहते हैं क्योंकि अमेरिका में कई कम्पनियां (गूगल, एमेजोन, माइक्रोसोफ्ट एवं मेटा सहित) अपने कर्मचारियों की छंटनी करती दिखाई दे रही हैं। ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था तो स्पष्टतः आर्थिक मंदी की चपेट में आ चुकी है। जबकि भारतीय अर्थव्यवस्था ने अक्टोबर-दिसम्बर 2023 की तिमाही में 8.4 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर हासिल की है। कई विदेशी वित्तीय संस्थानों ने वर्ष 2024 में भारत की आर्थिक विकास दर के अनुमान को आगे बढ़ा दिया है।

अब तो भारत में, ग्रामीण इलाकों सहित, विभिन्न उत्पादों के खपत का स्तर भी लगातार बढ़ रहा है। केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा विकास कार्यों के लिए अपने बजट में खर्च को लगातार बढ़ाया जा रहा है जिससे सामान्य नागरिकों के हाथों में अधिक पैसा पहुंच रहा है तथा इससे नागरिकों के बीच विभिन्न उत्पादों के खपत का स्तर बढ़ता दिखाई दे रहा है। शहरी उपभोक्ता तो रोजमर्रा की जरूरी वस्तुओं के साथ साथ चार पहिया वाहन एवं मकान आदि खरीदने पर भी भारी मात्रा में पैसा खर्च कर रहे हैं। घरेलू खपत में बढ़ौतरी के साथ ही भारत से निर्यात में भी तेजी देखी जा रही है।

स्वर्ग का वृक्ष परिजात वृक्ष

पांडवों की मां कुंती के नाम पर रखा गया किन्तूर गांव, जिला मुख्यालय बाराबंकी से लगभग 38 किलोमीटर पूर्वी दिशा में है। इस जगह के आसपास प्राचीन मंदिर और उनके अवशेष हैं। यहां कुंती द्वारा स्थापित मंदिर के पास, एक विशेष पेड़ है जिसे 'परिजात' कहा जाता है। इस पेड़ के बारे में कई बातें प्रचलित हैं जिनको जनता की स्वीकृति प्राप्त है। जिनमें से एक यह है, कि अर्जुन इस पेड़ को स्वर्ग से लाये थे और कुंती इसके फूलों से शिवजी का अभिषेक करती थी। दूसरी बात यह है कि भगवान कृष्ण अपनी प्यारी रानी सत्यभामा के लिए इस वृक्ष को लाये थे। ऐतिहासिक रूप से, यद्यपि इन बातों को कोई माने या न माने, लेकिन यह सत्य है कि यह वृक्ष एक बहुत प्राचीन पृष्ठभूमि से है।

परिजात के बारे में हरिवंश पुराण में निम्नलिखित कहा गया है। परिजात एक प्रकार का कल्पवृक्ष है, कहा जाता है कि यह केवल स्वर्ग में होता है। जो कोई इस पेड़ के नीचे मनोकामना करता है, वह जरूर पूरी होती है। धार्मिक और प्राचीन साहित्य में, हमें कल्पवृक्ष के कई संदर्भ मिलते हैं लेकिन केवल किन्तूर (बाराबंकी) को छोड़कर इसके अस्तित्व के प्रमाण का विवरण विश्व में कहीं और नहीं मिलता। जिससे किन्तूर के इस अनोखे परिजात वृक्ष का विश्व में विशेष स्थान है।

वनस्पति विज्ञान के संदर्भ में, परिजात को 'ऐडानसोनिया डिजिटाटा' के नाम से जाना जाता है तथा इसे एक विशेष श्रेणी में रखा गया है क्योंकि यह अपने फल या उसके बीज का उत्पादन नहीं करता है, और न ही इसकी शाखा की कलम से एक दूसरा परिजात वृक्ष पुनः उत्पन्न किया जा सकता है। वनस्पतिशास्त्रियों के अनुसार यह एक यूनिसेक्स पुरुष वृक्ष है और ऐसा कोई पेड़ और कहीं नहीं मिला है।

निचले हिस्से में इस वृक्ष की पत्तियां, हाथ की उंगलियों की तरह पांच युक्तियां वाली हैं जबकि वृक्ष के ऊपरी हिस्से पर यह सात युक्तियां वाली होती हैं। इसका फूल बहुत खूबसूरत और सफेद रंग का होता है और सूखने पर सोने के रंग का हो जाता है। इसके फूल में पांच पंखुड़ी हैं। इस पेड़ पर बेहद कम बार बहुत कम संख्या में फूल खिलता है लेकिन जब यह होता है, वह 'गंगा दशहरा' के बाद ही होता है। इसकी सुगंध दूर-दूर तक फैलती

बीजेपी का गढ़ रहा है रायपुर

1991 के बाद नहीं जीत पाई कांग्रेस, क्या इस बार होगा उलटफेर ?

छत्तीसगढ़ की रायपुर लोकसभा सीट काफी महत्वपूर्ण सीट मानी जाती है. रायपुर छत्तीसगढ़ की राजधानी है. खारुन नदी के तट पर बसा रायपुर छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा शहर है. रायपुर लोकसभा सीट 1952 में पहली बार अस्तित्व में आई थी. यहां से मौजूदा सासंद भारतीय जनता पार्टी के सुनील कुमार सोनी हैं. वहीं, इस बार भी बीजेपी ने बृजमोहन अग्रवाल को यहां से प्रत्याशी बनाया है. उधर, कांग्रेस ने इस सीट पर विकास उपाध्याय को टिकट दिया है. करीब तीन दशक से इस सीट पर बीजेपी का कब्जा है.

बता दें कि 1952 से 1971 तक इस सीट पर कांग्रेस का कब्जा रहा है. इसके बाद बाकी के कुछ साल को छोड़कर फिर यह बीजेपी की गढ़ माने जाने लगी. 1996 से लेकर 2019 तक इस सीट पर लगातार बीजेपी का कब्जा रहा. रमेश बैस लगाार जीतते रहे. बैस 1996 से 2014 तक लगातार सांसद रहे. 2019 के लोकसभा चुनाव में सुनील कुमार सोनी ने जीत दर्ज की. सुनील कुमार सोनी ने कांग्रेस के प्रमोद दुबे को हराया था. रायपुर लोकसभा के अंतर्गत विधानसभा की कुल आठ सीटें आती हैं. इन सीटों में बलौदा बाजार, भाटापारा, धरसीवा, रायपुर शहर ग्रामीण, रायपुर शहर पश्चिम, रायपुर शहर उत्तर, रायपुर शहर दक्षिण, आरंग और अभनपुर शामिल हैं.

2019 में कौन जीता?

2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के सुनील कुमार सोनी ने कांग्रेस के प्रमोद दुबे को 3,48,238 लाख वोटों से हराया था. सुनील कुमार सोनी को 837,902 लाख वोट जबकि प्रमोद दुबे को 489,664 लाख वोट मिले थे. वहीं, तीसरे नंबर पर बीएसपी के खिलेश कुमार साहू उर्फ खिलेश्वर रहे थे. खिलेश्वर को मात्र 10,597 हजार वोट मिले थे. इस साल यहां 68 फीसदी वोटिंग हुई थी.

2014 में क्या था रिजल्ट

2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के रमेश बैस ने कांग्रेस के सत्य नारायण शर्मा को शिकस्त दी थी. बैस ने शर्मा को 1,71,646 लाख वोटों से हराया था. बैस को 654,922 तो वहीं शर्मा को 483,276 लाख वोट मिले थे. वहीं तीसरे नंबर पर आम आदमी पार्टी के संदीप तिवारी रहे थे. संदीप को 15,139 हजार वोट मिले थे.

रायपुर लोकसभा सीट पर कितने मतदाता?

रायपुर लोकसभा सीट पर करीब 20,46,014 लाख मतदाता हैं. इनमें से 10,39,867 लाख पुरुष मतदाता हैं जबकि 10,05,871 महिला वोटर्स हैं. पिछले लोकसभा चुनाव में 13,96,250 मतदाताओं ने मतदान किया था. मतलब यहां 68 फीसदी मतदान हुआ था.

कब-कब किसने जीता?

1952-भूपेन्द्र नाथ मिश्रा/मिनीमाता अगम दास गुरु- कांग्रेस
1957-बीरेंद्र बहादुर सिंह/केशर कुमारी देवी- कांग्रेस
1962-केशर कुमारी देवी -कांग्रेस
1967- लखन लाल गुप्ता -कांग्रेस
1971- विद्याचरण शुक्ल- कांग्रेस
1977- पुरूषोत्तम कौशिक-जनता पार्टी
1980- केयूर भूषण-कांग्रेस
1984- केयूर भूषण-कांग्रेस
1989- रमेश बैस- भाजपा
1991- विद्याचरण शुक्ल-कांग्रेस
1996- रमेश बैस- भाजपा
1998- रमेश बैस- भाजपा
1999 -रमेश बैस- भाजपा
2004 -रमेश बैस- भाजपा
2009 -रमेश बैस- भाजपा
2014 - रमेश बैस- भाजपा
2019 -सुनील कुमार सोनी- भाजपा

रायपुर का संक्षिप्त इतिहास

रायपुर का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है. ऐसा माना जाता है कि रायपुर नगर की स्थापना 14वीं शत्ती ईस्वी में की गई थी. ऐतिहासिक और पुरातात्विक दृष्टि से रायपुर दक्षिणी कोशल का हिस्सा था और इसे मौर्य साम्राज्य के तहत माना जाता था. खारुन नदी के तट में बसा रायपुर छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा शहर है. इसके साथ-साथ राज्य का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र भी है. रायपुर को व्यापार के लिए देश के सबसे अच्छे शहरों मे से एक माना जाता है. छत्तीसगढ़ के विभाजन के पूर्व रायपुर मध्य प्रदेश राज्य का अंग था. रायपुर खनिज संपदा से भरपूर है. यह देश में स्टील एवं लोहे के बड़े बाजारों मे से एक है. अग पर्यटन स्थलों की बात करें तो यहां बूढ़ा तालाब, माता कौशल्या मंदिर, भगवान राम का करीब 500 साल पुराना मंदिर (दूधधारी मंदिर) है.

कभी कांग्रेस का गढ़, अब दुर्ग में लहरा रहा है भगवा

बीजेपी की टिकट पर भूपेश बघेल के भतीजा मैदान में

छत्तीसगढ़ का दूर्ग लोकसभा क्षेत्र देश के 543 और सूबे के 11 सीट में से एक है. यहां 2024 लोकसभा चुनाव के लिए सभी सियासी दलों ने तैयारियां शुरू कर दी है. इस सीट पर यह चुनाव हाई प्रोफाइल रहने वाला है. यहां कांग्रेस नेता राजेंद्र साहू का मुकाबला विजय बघेल से मुकाबला होने वाला है. विजय बघेल छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के भतीजे हैं. विजय बघेल ने पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव के दौरान भूपेश बघेल के खिलाफ पाटन विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा था. दोनों नेताओं के बीच कड़ी टक्कर देखने के लिए मिली थी. हालाकि जीत भूपेश बघेल की ही हुई थी. लेकिन विजय बघेल पाटन में भूपेश बघेल को घेरने में कामयाब जरूर हो गए थे. विजय बघेल वर्तमान में यहां के सांसद हैं. कांग्रेस पार्टी ने यहां शुरुआती 6 चुनाव में जीत हासिल की थी.

2019 में उन्होंने यहां से जीत दर्ज की थी. विजय बघेल ने कांग्रेस प्रतिमा चंद्राकर को हराया था. विजय बघेल को जहां 61.1 प्रतिशत मत मिले थे वहीं प्रतिमा चंद्राकर को 32.86 प्रतिशत मत मिले थे. जबकि तीसरे स्थान पर रहे बसपा के गीतांजलि सिंह को 1.45 प्रतिशत मत मिले. चौथे स्थान पर रहे एसआरडीपी के हिदर भाटी को को यहां एक प्रतिशत वोट भी नहीं मिला.

2019 में 391978 वोटों से बीजेपी की जीत

2019 में यहां बीजेपी के विजय बघेल ने कांग्रेस पार्टी के प्रतिमा चन्द्राकर को 391978 वोटों से हराया था. बीजेपी के विजय बघेल को 849,374 वोट मिले थे वहीं कांग्रेस पार्टी के प्रतिमा चंद्राकर को 4,57,396 वोट मिले. जबकि बहुजन समाज पार्टी के गीतांजलि सिंह को महज 20,124 वोट मिले. इस चुनाव में चौथे स्थान पर रहे हिदर भाटी को 12,107 वोट मिले थे. हिदर भाटी एसआरडीपी की टिकट पर मैदान में थे. इससे पहले 2014 में कांग्रेस पार्टी के ताम्रध्वज साहू ने जीत दर्ज की थी. ताम्रध्वज साहू ने बीजेपी के सरोज पांडे को 16848 वोटों से हराया था. ताम्रध्वज साहू को जहां 570,687 वोट मिले थे वहीं सरोज पांडे को 5,53,839 वोट मिले. जबकि तीसरे स्थान पर रहे आम आदमी पार्टी के विश्व रत्न सिन्हा को 17,455 वोट मिले थे. चौथे स्थान पर रहे निर्दलीय अरुण जोशी को 16529 पांचवे स्थान पर मुन्ना चंद्राकर को 15,600 वोट मिले.

दुर्ग का चुनावी इतिहास

दुर्ग में हुए पहले चुनाव में कांग्रेस पार्टी के वासुदेव एस किरोलिकर ने जीत दर्ज की थी. 1957 और 1962 में हुए दूसरे और तीसरे चुनाव में मोहन लाल बकलियाल, 1967 में कांग्रेस के विश्वनाथ तामस्कर, 1968 में चंदूलाल चन्द्राकर, 1977 में जनता पार्टी के मोहन जैन,1980 और 1984 में कांग्रेस के चंदूलाल चंद्राकर, 1989 में जनता दल के पुरूषोत्तम कौशिक, 1991 में चंदूलाल चंद्राकर. इसके बाद यहां भारतीय जनता पार्टी के ताराचंद साहू ने लगातार चार बार 1996, 1998, 1999 और 2004 में जीत दर्ज की. 2009 में बीजेपी के ही सरोज पांडे जीत दर्ज की.

दुर्ग लोकसभा का वोट गणित

दुर्ग लोकसभा सीट के अंतर्गत कुल नौ विधानसभा सीट हैं. इसमें सात सीट पर बीजेपी ने जीत दर्ज की है जबकि दो पर कांग्रेस पार्टी ने. दुर्ग के 9 विधानसभा सीट हैं-वैशाली नगर, बेमेतरा, अहिवारा, नवागढ़, पाटन, साजा, दुर्ग शहर, दुर्ग ग्रामीण और भिलाई नगर. पाटन विधानसभा सीट से बीजेपी के भूपेश बघेल ने जीत दर्ज की है. दुर्ग लोकसभा में कुल 19,40,269 मतदाता हैं. इनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 9,61,685, महिला मतदाताओं की संख्या 9,78,518 जबकि थर्ड जेंडर निर्वाचक 66 हैं. 2019 में यहां कुल मतदान प्रतिशत 71.74त्न था. बात जातिगत वोट की करें तो दुर्ग लोकसभा क्षेत्र कुर्मी, यादव और साहू वोट बहुल है. यहां साहू वोटर 30-35 प्रतिशत, कुर्मी, 20-22 प्रतिशत, यादव 12-15 प्रतिशत और सतनामी वोटर 20-22 प्रतिशत हैं.

शिवनाथ नदी तट पर बसे दुर्ग में एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा कारखाना भिलाई इस्पात संयंत्र यहीं स्थापित है. दुर्ग को को लघु भारत भी कहा जाता है.स्वतंत्रता संग्राम में दुर्ग जिले के सेनानियों का बड़ा योगदान रहा है.जैन समाज के तीन बड़े तीर्थ-नगपुरा और कैवल्यधाम दुर्ग जिले में हैं.दुर्ग में उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर का समृद्ध भंडार है. यहां का मैत्रीबाग चिड़ियाघर लोगों का पसंदीदा स्थल है.

कोरबा लोकसभा क्षेत्र कांग्रेस का गढ़, सरोज पाण्डेय दिला पाएंगी जीत

देश के 543 और छत्तीसगढ़ के 11 लोकसभा क्षेत्र में से एक कोरबा लोकसभा क्षेत्र है. यह लोकसभा क्षेत्र 2008 में परिसीमन के बाद अस्तित्व में आया है. इसके बाद 2009 में यहां पहली बार लोकसभा चुनाव हुआ, तब कांग्रेस पार्टी ने जीत दर्ज की. कांग्रेस पार्टी के चरण दास महंत कोरबा लोकसभा सीट के पहले सांसद बने. इससे पहले कोरबा लोकसभा सीट जांजगीर लोकसभा सीट का हिस्सा था. यह वही जांचगीर लोकसभा सीट हैं जहां से बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कांशीराम ने साल 1984 में अपनी राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी और पहला चुनाव लड़ा था. हालाकि उन्हें तब हार का सामना करना पड़ा था.

जांजगीर लोकसभा से पहले सांसद कांग्रेस पार्टी के अमर सिंह सहगल थे. 2009 में कोरवा लोकसभा बनने के बाद चरण दास महंत, फिर 2014 में बीजेपी डॉ बंशीलाल महतो फिर 2019 में कांग्रेस पार्टी के ज्योत्सना चरण दास यहां से जीत दर्ज करने में कामयाब हुए हैं.

ज्योत्सना महंत पहले सांसद

ज्योत्सना चरण दास महंत को 46.03 मत मिले थे. जबकि बीजेपी के ज्योति नंद दुबे को 43.72 प्रतिशत वोट मिले थे. गोंडवाना गणतंत्र पार्टी यानि जीजीपी के उम्मीदवार जो तीसरे स्थान पर थे तुलेश्वर हीरासिंह मरकाम 3.29 वोट मिले. तीसरे स्थान पर यहां नोटा और चौथे स्थान पर बहुजन समाज पार्टी के परमीत सिंह को 1.40 प्रतिशत वोट मिले थे.

2019 में 26349 वोटों से कांग्रेस की जीत

कांग्रेस नेता ज्योत्सना चरण दास महंत ने एक कड़े मुकाबले में बीजेपी के ज्योति नंद दुबे को 26,349 वोटों से हराया था. ज्योत्सना चरण दास महंत को जहां 523,410 वोट मिले वहीं बीजेपी के ज्योति नंद दुबे को 4,97,061 वोट मिले थे. गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के तुलेश्वर हीरासिंह मरकाम37,417 तो वहीं पांचवे स्थान पर रहे बीएसपी के परमीत सिंह 15880 वोट मिले.

बीएसपी उम्मीदवार को यहां नोटा 19,305 से भी कम वोट मिले थे.

2014 में बीजेपी के बंशीलाल की जीत

इससे पहले 2014 में बीजेपी के डॉ बंशीलाल महतो ने कांग्रेस के चरण दास महंत को एक नजदीकी मुकाबले में 4,265व वोटों से हराया था. बंशीलाल महतो को जहां 4,39,002 वोट मिले थे वहीं चरण दास महंत को 4,34,737 वोट मिले.यहां तीसरे स्थान पर रहे जीजीपी के हीरासिंह मरकाम को 52,753 वोट मिले. चौथे स्थान पर रहे आईएनडी के जीवन लाल रौतेल को 18,459 वोट मिले जबकि पाचवें स्थान पर यहां आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार अमर नाथ पांडे थे उन्हें तब 14594 वोट मिले थे.

2009 में कांग्रेस पार्टी ने की पहली जीत

परिसीमन के बाद बने कोरबा लोकसभा क्षेत्र में पहली बार 2009 में चुनाव हुआ था. तब कांग्रेस पार्टी के चरण दास महंत ने बीजेपी के करुणा शुक्ला को 20737 वोटों से हराया था. कांग्रेस पार्टी के चरण दास महंत को जहां 3,14,616 वोट मिले थे वहीं करुणा शुक्ला को 2,93,879 वोट मिले जीजीपी के हीरा सिंह मरकाम यहां तीसरे स्थान पर रहे जबकि निर्दलीय शंभू प्रसाद शर्मा एडवोकेट 23,136 वोट लाकर चौथे स्थान पर रहे थे.

कोरबा लोकसभा वोट गणित

कोरबा लोकसभा में कुल आठ विधानसभा क्षेत्र आते हैं. जिनमें मरवाही, रामपुर, पाली-तानाखार, कटघोरा, मनेंद्रगढ़, बैकुंठपुर, भरतपुर-सोनहत और कोरबा शामिल है. इन विधानसभा क्षेत्रों में पांच विधानसभा क्षेत्र कोरबा जिले की जबकि तीन विधानसभा क्षेत्र अविभाजित कोरिया जिले की शामिल हैं. कोरबा जिले का गठन 25 मई 1998 को किया गया था. यह एक आदिवासी बहुसंख्यक जिला है. सबसे ज्यादा बिजली उत्पादन होने की वजह से कोरबा को छत्तीसगढ़ राज्य का पावर कैपिटलव भी कहा जाता है. यह जिला बिलासपुर संभाग के अंतर्गत आता है और मुख्य रूप से आदिवासी द्वारा संरक्षित जनजाति कोरवा (पहाड़ी कोरवा) का बसाया हुआ है.

कोरबा लोकसभा क्षेत्र में कुल 15,08,840 मतदाता है. इससे पुरुष मतदाता की संख्या 7,49,560 है जबकि महिला मतदाताओं की संख्या 7,59,225 है. यहां थर्ड जेंडर निर्वाचक कुल 55 हैं. कोरबा में 2019 में हुए मतदान का कुल मतदान प्रतिशत 75.35% था. बीजेपी ने यहां सरोज पांडे को टिकट दिया है तो कांग्रेस पार्टी ने अपने मौजूदा सांसद को एकबार फिर से मैदान में उतारा है.

सबसे ज्यादा बिजली उत्पादन

छत्तीसगढ़ का कोरबा राज्य के लिए सबसे ज्यादा बिजली उत्पादन करता है. यहां पर राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी और एनटीपीसी के अलावा कई निजी कंपनियों के भी प्लांट हैं. इसके साथ ही यहां एशिया के सबसे बड़े खुले कोयला खदान गेवरा माइंस है. इसके साथ ही भारत का सबसे बड़ा एल्युमिनियम संयंत्र भारत एल्युमिनियम कंपनी बालको भी यहीं है. कोरबा के सतरेंगा पहाड़ और झील को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं.

झूठ का व्यापार करती है कांग्रेस

खैरागढ़ सभा में गरजे शाह, बोले-नक्सलवाद को खत्म करने का किया दावा

राजनांदगांव। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने राजनांगांव से भाजपा प्रत्याशी संतोष पांडेय के समर्थन में रविवार को खैरागढ़ के फतेह मैदान में जमकर गरजे।

अमित शाह ने कहा, कांग्रेस झूठ बोलने से बाज नहीं आती है। कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे बोलते हैं, पीएम मोदी आरक्षण खत्म कर देंगे। लेकिन मैं छत्तीसगढ़ की जनता से कहने आया हूं, आरक्षण को कुछ नहीं होने देंगे। आरक्षण दलितों की हो या आरक्षण पिछड़े वर्ग की हो।

शाह ने कहा, मोदी की तीसरी पारी में छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद को खत्म करने का काम करेंगे। पूरे देश में नक्सलवाद खत्म हो गया है। देश की पूंछ छत्तीसगढ़ में बाकी है। उसे भी इस बार खत्म करेंगे। पीएम मोदी की सरकार तीसरी बार बनवाइए, हम छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद खत्म कर देंगे।

अमित शाह ने पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के राजनांदगांव उम्मीदवार भूपेश बघेल पर जमकर निशाना साधा। शाह ने कहा, भूपेश कका इतना सारा भ्रष्टाचार करके पेट नहीं भरा है अभी भी यहां से सांसद बनना चाहते हैं। मैं आज राजनंदगांव की जनता को कहने आया हूं कि आप लोगों ने भूपेश बघेल को विधानसभा में हराया है, इससे भी बड़े मार्जिन के साथ इनको फिर से घर पर भेजने का काम करिए।

Positive Health Zone
Unique Wellbeing Center
Quantum Machine से
नाड़ी परीक्षण
HRV Technology, Based Health Analysis
वैदिक काल से ही हमारे वैद्य नाड़ी जांच के द्वारा हमारे स्वास्थ्य की जांच करते आ रहे है।
आज इक्कीसवीं सदी में नाड़ी जांच करना और भी सरल हो गया है,
Veda Pulse - Modern Nadi Vaidya
के माध्यम से।
Vedapulse® Assesses
- Prakruti vikruti analysis
- Dosha vata pita kapha and Subdosha balance.
- Agni & 7 dhatu balance.
- Balance of pancha mahabhuta.
- Ojas, tejas, prana analysis.
- Rate of biological aging
- Satva, rajas, tamas analysis.

"Pulse Of The Organs" Helps Forming Recommendations For Diet Plan Day Plan And Body Detox Plan With Personalised Lifestyle Modifications Recommendations.

कांग्रेस का किला रहा महासमुंद, 11 बार मिली जीत

देश के 543 और छत्तीसगढ़ की 11 लोकसभा सीटों में से एक महासमुंद लोकसभा सीट है. महासमुंद छत्तीसगढ़ की राजनीति का एक बड़ा केंद्र रहा है. यहां से विद्याचरण शुक्ल 6 बार सांसद चुने गए. वो एक बार यहां से जनता दल की टिकट पर भी संसद पहुंचे हैं. विद्याचरण शुक्ल के भाई एवं अविभाजित मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे श्यामाचरण शुक्ल भी यहां से एक बार सांसद चुने गए हैं. इसके साथ ही छत्तीसगढ़ के पहले सीएम रहे अजीत जोगी भी महासमुंद के सांसद रहे हैं. महासमुंद में 19 बार हुए लोकसभा चुनाव (उपचुनाव समेत) में कांग्रेस पार्टी ने 12 बार जीत दर्ज की है. कभी कांग्रेस का किला कहे जाने वाले महासमुंद लोकसभा क्षेत्र में पिछले तीन बार से बीजेपी का कब्जा है. वर्त्तमान में यहां से चुन्नी लाल साहू सांसद हैं.

चुन्नी लाल साहू ने कांग्रेस पार्टी के धनेन्द्र साहू को हराया है. चुन्नी लाल साहू को जहां 50.44 प्रतिशत वोट मिले वहीं कांग्रेस के धनेन्द्र साहू को 43 प्रतिशत. यहां तीसरे स्थान पर रहे निर्दलीय देवेन्द्र सिंह ठाकुर को 1.27 प्रतिशत वोट मिले थे. जबकि चौथे स्थान पर रहे बीएसपी के धनसिंह कोसरिया को 0.92 प्रतिशत वोट ही मिले.

2019 में बीजेपी की तीसरी जीत

बीजेपी के चुन्नी लाल साहू ने कांग्रेस पार्टी के धनेन्द्र साहू को 90,511 वोटों से हराया था. चुन्नी लाल साहू को जहां 616,580 वोट मिले वहीं कांग्रेस के धनेन्द्र साहू को 5,26,069 वोट, तीसरे स्थान पर रहे निर्दलीय देवेन्द्र सिंह ठाकुर को 43.06 प्रतिशत मत मिले थे. जबकि चौथे स्थान पर रहे बीएसपी प्रत्याशी धनसिंह कोसरिया को 11245 वोट मिले. तीसरे और चौथे स्थान पर रहे प्रत्याशी को नोटा 21241 से भी कम वोट मिले थे.

2014 में भी जीती थी बीजेपी

इससे पहले 2014 के लोकसभा चुनाव में यहां चंदूलाल साहू ने कांग्रेस पार्टी के अजीत जोगी को एक कड़े मुकाबले में 1,217 वोटों से हराया था. यहां तीसरे चौथे और पांचवे स्थान पर भी चंदूलाल साहू नाम के उम्मीदवार थे. तीसरे स्थान पर रहे निर्दलीय चंदूलाल साहू को 20255, चौथे स्थान के चंदूलाल साहू को 12308 और पांचवे स्थान पर रहे चंदूलाल साहू को 10979 वोट मिले थे. दरअसल 2014 में बीजेपी के चंदूलाल साहू के साथ यहां 11 चंदूलाल साहू ने नामांकन किया था. कहा जाता है कि अजीत जोगी ने सभी निर्दलीय चंदूलाल साहू को बीजेपी के चंदूलाल साहू को हराने के लिए मैदान में उतारा था.

GYAN पर फोकस,तमिल भाषा पर जोर

मोदी गारंटी का भाजपा घोषणापत्र

लोकसभा चुनाव 2024 के लिए बीजेपी ने 'मोदी की गारंटी' के नाम से अपना घोषणापत्र– जिसे 'संकल्प पत्र' भी कहा जा रहा है, जारी कर दिया जिसमे पिछले दस वर्षों में सरकार की उपलब्धियों का जिक्र किया है संकल्प पत्र मे अनुच्छेद 370 को निरस्त करना और महिला आरक्षण कानून शामिल है. इसके अलावा, तीसरी बार सरकार में आने के बाद का रोड मैप प्रस्तुत किया गया है. बीजेपी संकल्प पत्र में हर वादे को 'मोदी की गांरटी' बताया गया है. यह बतलाता है कि भाजपा पूरा लोकसभा चुनाव मोदी के ब्रांड पर ही लड़ना चाहती है । पीएम मोदी अपने भाषण में 'मोदी की गांरटी' टर्म का प्रयोग लगातार कर रहे हैं. भाजपा का संकल्प पत्र मोदी के GYAN – गरीबों, युवाओं, किसानों और महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया है. जिसमे

- अगले 5 साल तक मुफ्त राशन दिया जाएगा.
- आयुष्मान भारत योजना के तहत गरीबों को 5 लाख तक का मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण इलाज मिलेगा.
- गरीबों के लिए 3 करोड़ और घर बनाने का संकल्प.
- पीएम आवास योजना का विस्तार होगा.
- हर घल नल से जल मिलेगा.
- झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले गरीब परिवारों को आवास की सुविधा मिलेगी.
- उज्जवला योजना के तहत रसोई गैस कनेक्शन की सुविधा दी जाएगी. प्रमुख है

घोषणा पत्र को एकबारिगी देखने से लगता है कि भाजपा महिला वॉटर्स पर ज्यादा जोर दे रही है वैसे देखा जाए तो पिछले दस सालों में देखा गया है कि बीजेपी का सबसे बड़ा वोट बैंक महिलाएं है, इसमें वो महिलाएं सबसे अधिक हैं, जिन्हें केंद्रीय योजनाओं– लखपति दीदी,उज्ज्वला योजना, पीएम आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन के तहत पीएम शौचालय योजना आदि– का लाभ मिला है. घोषणापत्र में तीन करोड़ और लखपति दीदी बनाने की गारंटी दी गई है। सर्वाइकल कैंसर पर अधिक जागरूकता लाने के उद्देश्य से महिलाओं के लिए शौचालयों की संख्या बढ़ाना और महिला शक्ति वंदन अधिनियम का कार्यान्वयन पर जोर है. बीजेपी ने वादा किया है कि औद्योगिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं के लिए हॉस्टल का निर्माण किया जाएगा, जिसमें शिशुगृह जैसी बुनियादी सुविधाएं होंगी. खेलों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और पाइप से सस्ती रसोई गैस घर–घर पहुंचाने का वादा भी किया गया है. महिला वोटर्स बीजेपी का एक मजबूत बेस है. 2014 में बीजेपी को 29 और कांग्रेस को 19 फीसदी महिलाओं ने वोट किया था, जबकि 2019 में बीजेपी को 36 और कांग्रेस को 20 प्रतिशत महिलाएं वोट दी थी. 2019 के चुनाव में गुजरात, एमपी, राजस्थान, कर्नाटक,यूपी और झारखंड में करीब 50 या इससे अधिक प्रतिशत महिलाओं का वोट बीजेपी को मिला था. जबकि पश्चिम बंगाल, असम, ओडिशा में भी 38 प्रतिशत से अधिक महिला वोट बीजेपी को मिले थे. ऐसे में बीजेपी ने एक बार फिर अपने मजबूत महिला वोट को जोड़े रखने का फोकस किया है. बीजेपी ने युवाओं को रोजगार के अवसर देने का वादा तो जरूर किया लेकिन कितना रोजगार दिया जाएगा, इसका कोई डेटा 2014 की तरह नहीं दिया.

ऐसे में विपक्ष को एक बार फिर बीजेपी को घेरने का मौका मिल गया, जो केंद्र पर युवाओं को नौकरी के नाम पर ठगने का आरोप लगाता आ रहा है. घोषणा पत्र में कहा गया कि पेपर लीक को नियंत्रण में करने के लिए, जो कानून बनाया गया है, उसे सख्ती से लागू करेंगे और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी. इसके अलावा परीक्षाओं को पारदर्शी तरीके से कराने की भी बात कही है.

SC-ST वोट पर भी भाजपा की नजर है इसलिए बीजेपी ने 2025 को 'जनजातीय गौरव वर्ष' घोषित करने का वादा किया है. साथ ही, जनजातीय समुदाय के स्वंतत्रता सेनानियों के संग्राहलय स्थापित करने और जनजातीय कला को बढ़ावा देना का ऐलान किया है.

बीजेपी को लोकसभा चुनाव में दक्षिण राज्यों में कर्नाटक के बाद तमिलनाडु में बड़ी सफलता की उम्मीद है इसलिए चुनावी घोषणा पत्र में तमिल भाषा और संस्कृति के वैश्विक उत्थान के लिए दुनिया भर में तिरुवल्लुवर सांस्कृतिक केंद्र स्थापित करने का वादा किया है. प्रधानमंत्री पिछले दो महीने में सात बार तमिलनाडु का दौरा कर चुके हैं. इस दौरान उन्होंने तमिल संस्कृति, भाषा और प्रतीकों को जोर–शोर से बढ़ावा देने का ऐलान किया.

- **'GYAN' पर केंद्रित घोषणापत्र अर्थात**
  - **गरीब**
  - **युवा**
  - **अन्नदाता (किसान)**
  - **नारी (महिला सशक्तिकरण)**

आइये जानते है कि मौजूदा मोदी सरकार ने पिछले दस वर्षों में इन चार मोर्चों पर कैसा प्रदर्शन किया है? पहली नज़र गरीबी के मोर्चे पर

नीति आयोग की तरफ से जारी लेटेस्ट डिस्कशन पेपर में दावा किया गया है कि पिछले नौ वर्षों में 24.82 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं. कुल आबादी में गरीबों का अनुपात 2013–14 में जहां 29.17 प्रतिशत था वो 2022–23 में घटकर 11.28 प्रतिशत हो गया. यह पिछले सालों की तुलना में तेज गिरावट को दर्शाता है. युवाओं में बेरोजगारी

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और मानव विकास संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से जारी भारत रोजगार रिपोर्ट 2024 के अनुसार, भारत में लगभग कुल बेरोजगार वर्कफोर्स में 83 प्रतिशत युवा हैं.

ध्यान देने वाली बात यह है कि कुल बेरोजगार युवाओं में माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं का अनुपात लगभग दोगुना हो गया है. यह 2000 में 35.2 प्रतिशत से बढ़कर 2022 में 65.7 प्रतिशत हो गया है. किसानों के मोर्चे पर किसानों पर फोकस करते हुए, सरकार ने उनकी वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने, उनके कौशल विकास को बढ़ावा देने, बाजार तक पहुंच की सुविधा देने और टिकाऊ किसानी को बढ़ावा देकर किसानों की भलाई के उद्देश्य से कई योजनाएं शुरू कीं. इन पहलों में खास है 2016 में शुरू की गई प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (क्स्नक्ष्ङ्क). यह प्रीमियम के मामले में विश्व स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी बीमा योजना है. इसका उद्देश्य किसानों को अप्रत्याशित घटनाओं से होने वाली फसल की बर्बादी से बचाना है.

पिछले आठ सालों में 56.80 करोड़ किसान आवेदन रजिस्टर किए गए हैं. 23.22 करोड़ से अधिक किसान आवेदकों को बीमा का क्लेम मिल गया है, यानी बीमा की राशि मिली है. इस दौरान, किसानों ने प्रीमियम के अपने हिस्से के रूप में लगभग 31,139 करोड़ रुपये का भुगतान किया. जबकि 1,55,977 करोड़ रुपये का भुगतान बीमा के क्लेम के रूप में किसानों को किया जा चुका है.

हालांकि सरकार ने जो बीमा क्लेम के बदले भुगतान किया है, उसमें गिरावट देखी गई है. 2016–17 में भुगतान किया गया कुल बीमा क्लेम 16795.5 करोड़ था, वो 2018–19 में बढ़कर 28651.8 करोड़ हो गया. लेकिन 2021–22 में भुगतान किया गया बीमा क्लेम केवल 14716.9 करोड़ था. यानी यह 2016–17 के शुरुआती बीमा क्लेम के भुगतान से भी कम है. बात करें महिला सशक्तिकरण की तो भारत में महिला की लेबरफोर्स में भागीदारी की दर कई दशकों से लगातार निराशाजनक रूप से कम बनी हुई है. यह ट्रेंड पिछले नौ वर्षों में और भी बदतर हो गया है. वर्ल्ड बैंक के आंकड़ों के अनुसार, साल 2012 में 27 प्रतिशत थी, लेकिन 2021 तक यह गिरकर 22.9 प्रतिशत हो गई. यह नीचा जाता ग्राफ चिंताजनक है. यह वर्कफोर्स तक पहुंचने और बाहर निकलकर काम करने में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को दर्शाता है. NCRB ने हाल ही में अपनी वार्षिक अपराध रिपोर्ट जारी की. यह रिपोर्ट भारत में महिला सुरक्षा की गंभीर वास्तविकता पर प्रकाश डालती है. आंकड़ों के मुताबिक 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 4,45,256 मामले सामने आए, जो हर घंटे दर्ज होने वाली लगभग 51 एफआईआर के बराबर है. यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है क्योंकि 2022 में 4,28,278 मामले दर्ज किए गए थे जबकि 2020 में 3,71,503 मामले दर्ज किए गए थे.

इजरायल - ईरान वार

अमेरिका कहां खड़ा ?,क्या है भारत की चुनौती ?

ईरान ने रविवार, 14 अप्रैल की सुबह जवाबी हमले में इजरायली मिलैटरी बेस ठिकानों पर हमला किया. सद्दाम हुसैन के हमले बाद यह पहली बार है, जब किसी विदेशी ताकत ने इजरायल की जमीन पर हमला किया है इस महीने की शुरुआत में इजरायली स्न–35 विमानों ने दमिश्क में ईरानी दूतावास परिसर पर हमला किया, जिसमें सीरिया में शीर्ष ईरानी सैन्य सलाहकार ब्रिगेडियर रेजा जाहेदी की मौत हो गई. ये हमला वियना कन्वेंशन का खुला उल्लंघन था, जिसपर इजरायल और ईरान दोनों ने हस्ताक्षर किए हैं.

अमेरिका को हमले से कुछ मिनट पहले ही इसकी सूचना दी गई थी. हालांकि, अमेरिका ने अपने बैक चैनल सोर्स के माध्यम से ईरान को सूचित कर दिया है कि इस पूरे मामले से उसका कोई लेना–देना नहीं है.

हालांकि, बहुत जल्द अमेरिका ने अपना रुख बदल लिया. अमेरिका ने अपने मीडिया आउटलेट्स के जरिए यह धारणा बनाने की भी कोशिश की कि वह कोई राजनयिक इमारत नहीं थी और ऐसे में इजरायल ने वियना कन्वेंशन का उल्लंघन नहीं किया है. लेकिन अंतरराष्ट्रीय कानून में इसकी कोई कानूनी वैधता नहीं है. केवल ईरान और सीरिया ही यह तय कर सकते हैं कि दमिश्क में कौन सी इमारतें राजनयिक संपत्ति हैं. तीसरे पक्ष का इसपर कोई अधिकार नहीं है. अमेरिका की इस चालाकी भरी रणनीति के बाद ईरान के पास इजरायल पर हमला करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा.

संयुक्त राष्ट्र में ईरानी स्थायी प्रतिनिधि ने एक बयान जारी कर कहा है कि उनका बदला पूरा हो चुका है, लेकिन अगर इजरायल आगे बढ़ता है, तो वो युद्ध की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए भी तैयार है. ऐसा लगता है कि इजरायल के अंदर इन हमलों से ईरान ने अपने कई सामरिक और रणनीतिक लक्ष्य हासिल कर लिए हैं. ईरान ने न केवल इजरायल का प्रतिरोध किया है, बल्कि इसने अमेरिका को भी संकेत दिया है कि मध्य पूर्व में उसके ठिकानों (जवान और हथियार) को जब चाहे तब निशाना बनाया जा सकता है. अगर दुनिया की सबसे मजबूत एयर–डिफेंस तैनाती के साथ इजरायल हमले को पूरी तरह से नहीं रोक सका, तो सिंपल एयर–डिफेंस सिस्टम वाले अमेरिकी ठिकानों का क्या होगा?

NATO स्पष्ट रूप से दो मोर्चों पर लड़ाई नहीं चाहता है. यह यूक्रेन में कमजोर दिख रहा है. लाल सागर में हुती–प्रभुत्व वाले अंसारल्लाह के दबाव में इसका नौसैनिक गठबंधन जर्जर हो गया है. इन परिस्थितियों में वह नेतन्याहू द्वारा किसी अन्य युद्ध में घसीटा जाना नहीं चाहता है. अमेरिका के बयान से पता चलता है कि वह अपनी G–7 मंडली के साथ एक कूटनीतिक कदम उठाएगा और ईरान के खिलाफ किसी भी सैन्य टकराव से बचेगा. गेंद अब वास्तव में नेतन्याहू के पाले में है. अगर वह इस क्षेत्र को व्यापक युद्ध में धकेलना चाहते हैं, तो आश्वस्त रहें कि तेहरान को बहुत कम या कोई शिकायत नहीं है. ईरान के लिए प्रतिरोध महत्वपूर्ण है. अब इजरायल के किसी भी हमले का वह उतनी ही ताकत से जवाब देगा. ईरानी नागरिक बुनियादी ढांचे पर इजरायली हमले से इजरायली परमाणु संयंत्र भी ईरानी निशाने पर आ जाएंगे. और फिर, सभी दांव बंद हो जाएंगे.

ईरान और इजरायल लंबे समय से एक–दूसरे के विरोधी रहे हैं. इजरायल का मानना है कि ईरान मध्य पूर्व के इलाके में इजरायल, यहूदी और अमेरिकी विरोधी ताकतों को शह देता है. ईरान की ओर से इस जवाबी हमले के बाद दोनों देश आमने–सामने की जंग के कगार पर खड़े हैं. इस जंग से मध्य–पूर्व में नुकसान तो है ही लेकिन इसके साथ ही इसका असर भारत पर भी पड़ेगा. भारत ने औपचारिक रूप से 17 सितंबर, 1950 को इजरायल को मान्यता दी थी. भारत और इजरायल के बीच दूतावास 1992 में खोले गए थे. इस वक्त ही दोनों के देशों के बीच पूरी तरह के राजनयिक संबंध भी स्थापित किए गए थे.

विदेश मंत्रालय के मुताबिक, राजनयिक संबंध स्थापित होने के बाद से डिफेंस और एग्रीकल्चर के क्षेत्र में दोनों देशों का द्विपक्षीय रिश्ता रहा है. ये दोनों क्षेत्र ही भारत और इजरायली रिश्ते के मुख्य स्तंभ रहे हैं.

दूसरी ओर अगर ईरान की बात करें तो भारत और ईरान का रिश्ता सदियों पुराना है. भारत और ईरान के बीच का संबंध ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंधों पर आधारित हैं. दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय आदान–प्रदान, वाणिज्यिक और कनेक्टिविटी सहयोग, सांस्कृतिक संबंध हैं. ईरान और इजरायल के जंग के बढ़ते आसार के बीच भारत की भी कई चिंताएं हैं. अगर इस इलाके में जंग के हालात बनते हैं तो इससे दुनिया भर में तेल की कीमतों पर असर होगा. जाहिर है इसका असर भारत पर पड़ेगा. तेल की कीमतों में इसका असर इसलिए पड़ेगा क्योंकि बड़ी संख्या में तेल का निर्यात होर्मुज जलडमरूमध्य के रास्ते दुनिया भर में होता है. ईरान भारत से चावल, चाय, चीनी, फार्मास्यूटिकल्स, मानव निर्मित स्टेपल फाइबर, इलेक्ट्रिकल मशीनरी, कृत्रिम आभूषण आयात करता है. जबकि भारत ईरान से सूखे मेवे, अकार्बनिक / कार्बनिक रसायन, कांच के बने पदार्थ आयात करता है. लेकिन हाल के कुछ सालों में ईरान और भारत के व्यापारिक संबंध काफी निचले स्तर पर पहुंच गए हैं. भारत से इजरायल मुख्य रूप से मोती और कीमती पत्थर, मोटर वाहन डीजल, रसायन और खनिज उत्पाद, मशीनरी और बिजली के उपकरण, प्लास्टिक, कपड़ा और परिधान उत्पाद, आधार धातु और परिवहन उपकरण, कृषि उत्पाद आयात करता है. वहीं इजरायल से भारत खनिज / उर्वरक उत्पाद, मशीनरी और बिजली के उपकरण, पेट्रोलियम तेल, रक्षा, मशीनरी और परिवहन उपकरण आयात करता है. हालांकि भारत और इजरायल के बीच व्यापारिक संबंध गाजा युद्ध के बाद से से थम गया है क्योंकि लाल सागर में यमन की हैती विद्रोहियों ने रोक लगा रखा है.

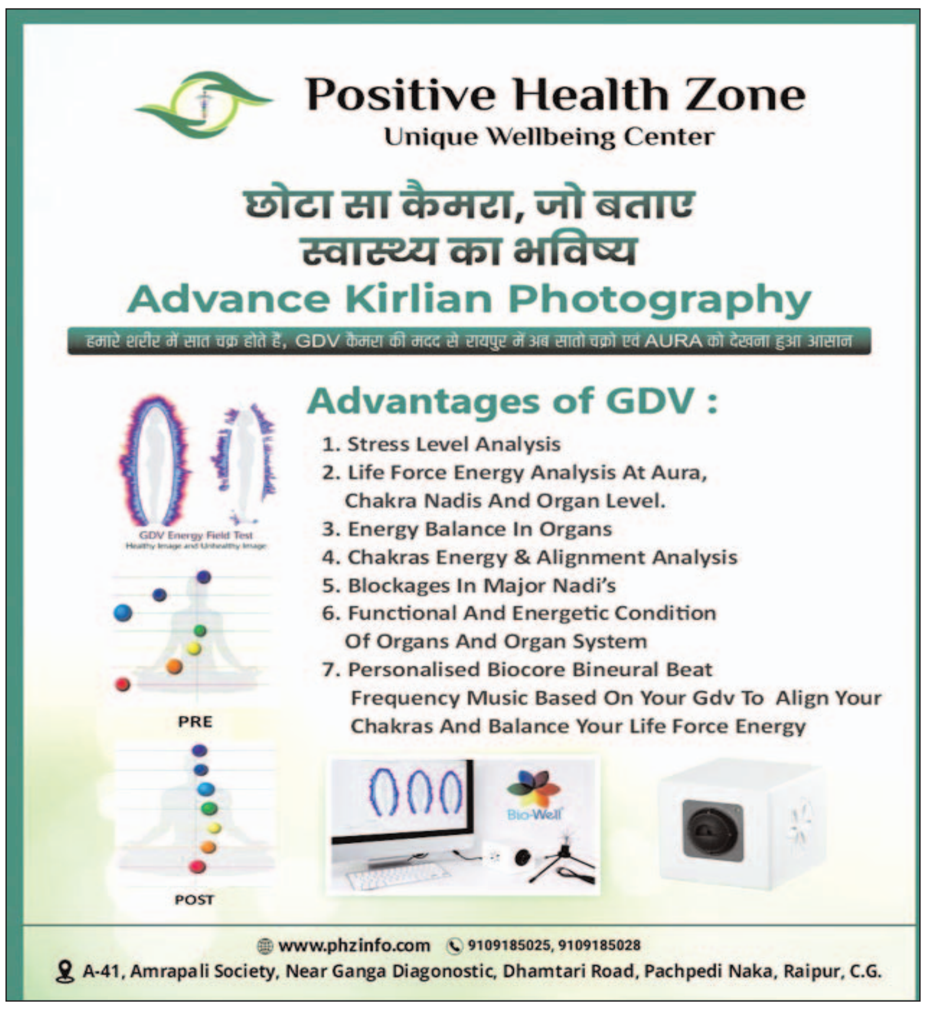

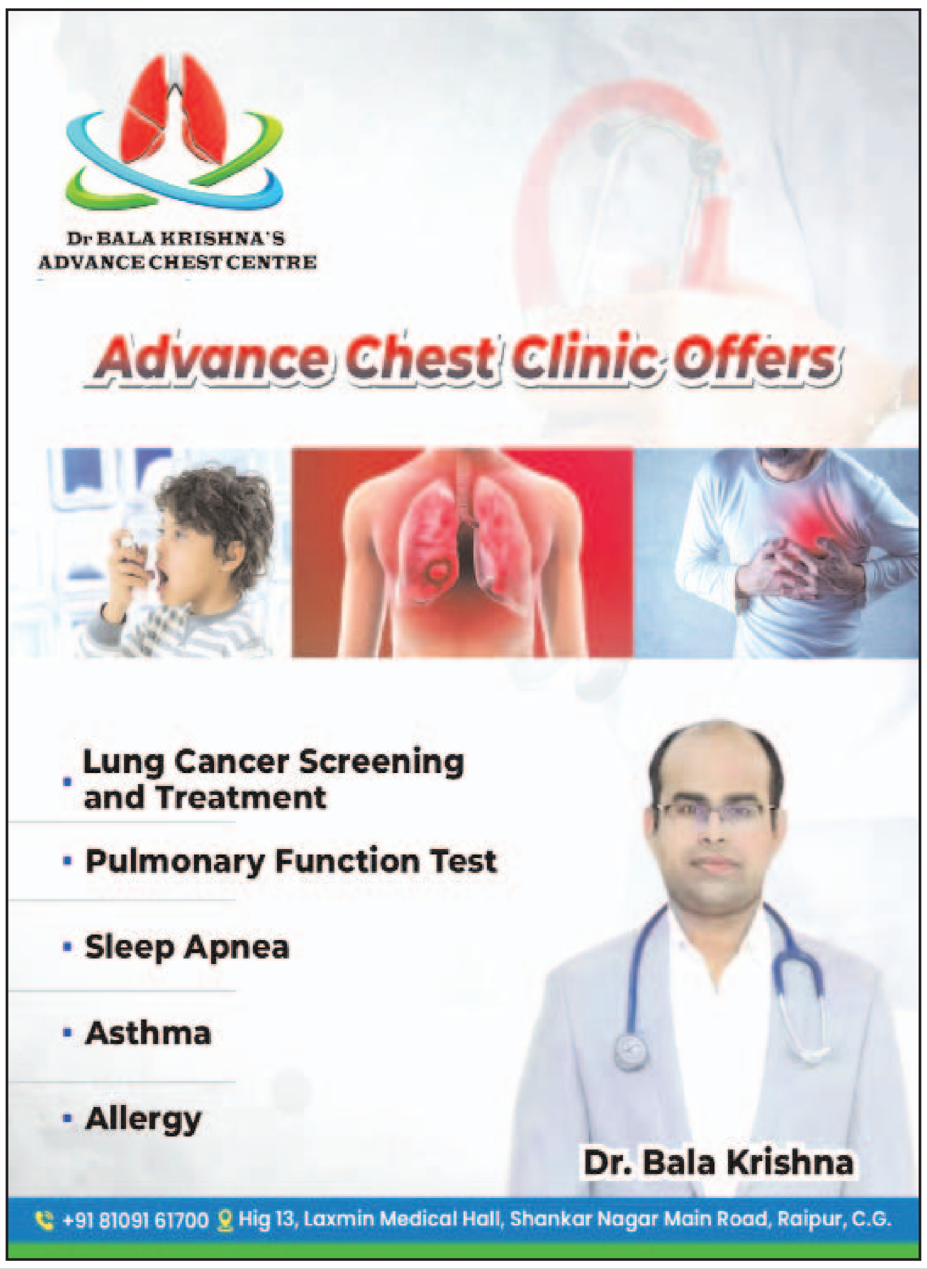

कुछ भी स्थायी नहीं इसलिए जो पास है उसी में खुश रहें

यात्रा संस्मरण

जीवन की खुशियाँ रंगों से है , और रंगो का त्यौहार है होली . विभिन्न रंग मिलकर हमारे जीवन में एक रूपता लाते है और जब जीवन के प्रति एकरूपता आने लगती है तो अध्यात्म की ओर कदम बढ़ने लगते है अध्यात्म को समझना है तो शिवत्व से जुड़ना होगा.शिव को समझना है तो नागा साधुओ को समझना चाहिए. हमारी यही लालसा ने हमें महाकाल धाम की ओर खींचने लगी.बस फिर क्या ,हमने बनाई अपनी टोली और एक कार में हुए पांच सवार, निकल पड़े महादेव के धाम . मनाने होली और रंगपंचमी

का त्यौहार . पांच दिवसीय यात्रा का खाखा खींचा प्रश्न आया रात्री विश्राम का तो विमर्श में सहमती बनी मंडलेश्वर महेश्वर नर्मदा कुटी स्थित पंचदशनाम जुना अखाड़ा के महंत श्री श्री 1008 वेदानंद सरस्वती जी का आश्रम .

प्रात:काल 6;30 बजे मै रायपुर से निकल पड़ा दुर्ग की ओर जहां मेरे चार मित्र संतोष सिंह जिन्हें प्यार से (बॉबी)बुलाते है ,आतिश अधिकारी जिन्हें दादा सम्बोधित करते है ,राधेश्याम चौधरी और सुधाकर सिंह का साथ हुआ. राजनांदगाव पहुँचते लगभग 9 बज रहे थे। पोहा जलेबी की खुशबू मनस पटल से होते होए नथुनों को गंध दे रही थी जिससे जीभ की स्वाद ग्रंथिया एक्टिवेट होकर पेट में कुछ हलचल उत्पन्न कर रही थी। शहर के प्रसिद्ध होटल खंडेलवाल में हमने पोहा जलेबी का नाश्ता कर आगे को प्रस्थान किया। महाराष्ट्र में प्रवेश करते ही देवरी की राधिका होटल में हमने चाय पी और सफर की निरंतरता को

कायम रखा. सफर लम्बा था तो जवाबदारी भी बाटनी थी . कार चलाने की जवाबदारी दो लोगों के पास थी बॉबी और आतिश दादा . राधे हमारे पथ प्रदर्शक थे उनके पास गूगल महराज से कोआर्डिनेट करते हुए अपने स्मार्ट दिमाग का उपयोग कर सही सुरक्षित और जल्दी पहुँच मार्ग बताने का था. यात्रा बोरिंग न हो उसकी जवाबदारी मैंने उठाई तो सुधाकर खान पान आदि का ध्यान दिलाने की जवाबदारी दी ली .

बात करते हम भंडारा आ गए बीच बीच में पुल आदि का निर्माण कार्य चलने की वजह से गाडी की रफ़्तार में कुछ कमी आती रही फिर भी यात्रा सुखद थी हाँ हमे प्रतीत हो रहा था की रायपुर की अपेक्षा इधर का मौसम कुछ ज्यादा गर्म है. खैर चाय की तलब फिर होने लगी और हम कामटी पहुँच गए थे.जहाँ मित्र पाटिलजी से मुलाक़ात हुई, जिन्हें बॉबी ने फोन कर दिया था पाटिल ने हमें शानदार जायकेदार चाय पिलाई जिससे हमारी अल्प यात्रा की थकान मिट गई और बॉबी ने गाडी मुलताई हाइवे पर दौड़ पड़ी . शानदार रोड कोई जर्क नहीं गाडी 120 की स्पीड पर दौड़ रही थो. लगभग 2 घंटे चलने के बाद पेट के चूहे हम उछलने लगे तो हमने ढाबे पर गाडी रोक दी, बैतूल हाइवे पर बने इस ढाबे को अभी कुछ ही माह हुए थे . होली की वजह से मिस्त्री नहीं थे सो हमने दाल फ्राई ,रोटी चावल और पनीर की सब्जी का आर्डर किया .खान भी गारम और मौसम भी गरम इसलिए हम जल्दी निवृत हो कर आगे बढ़ चले . अभी कुछ दूर ही आये थे की रास्ता थोड़ा खराब मिला और गाडी पंचर हो गई . स्टेपनी चेंज की और बैतूल के पास पंचर ठीक कराकर आगे बढे . हाँ यहाँ पर एक बार फिर चाय का सेवन हुया क्योंकि शाम के 5:30 बज चुके थे . हमें लगभग 4 घंटे का सफर अभी और तय करना था 9 बजे हम बरवाह पहुँच गए यहाँ से एक मार्ग ओंकारेश्वर को और एक महेश्वर को जाता है. लगभग 40 किमी था हमार आश्राम यह मुख्य बाज़ार भी थी जहां से गुरुदेव के लिए हमने फूलमाल इत्यादि सहित कुछ अन्य उपयोग के सामान खरीदे और रात्री 10बजे हमने गुरुदेव का चरण वन्दन कर लिया. आश्रम बिलकुल नैसर्गिक प्रकृति को गोद में था एक शांत वातावरण था शायद सभी पक्षी भी शयन करने जा चुके थे एक गुरूजी ही थे जो जग रहे थे शायद हमारे इन्तजार में . गुरूजी तत्काल ही हम लोगो की व्यवस्था में लग गए अपने शिष्य लखन के साथ . हमने उनसे आग्राह किया और हमारी एक टोली भोजन व्यवस्था में लगी तो दूसरी सोने के इंतजाम में . भोजन आदि से निवृत होते रात्री के 12 बज चुके थे ,थकान भी लग रही थी हमने बहार बने दालान में खाट लगाईं और सोने चले गए तभी गुरु जी ने आवाज लगाईं बाहर मच्छर होंगे ये कूलर ले जाओ हमे असकट हो रही थी. तो कानो में कुछ आवाज आई देखा गुरूजी कूलर खिसका रहे थे. हम दौड़ कर गए और कूल उठा लाये. रात्री नीरवता के यौवन में चढ़ रही थी मौसम की शीतलता बढ़ रही थी ,गुरुदेव ने हम सभी के पलंग पर कम्बल डाल रखा था . थकान में कम्बल का साथ और शुद्ध वायु ने तत्काल हमें नीद के आगोश में भेज दिया . जब आँख खुली तो सुबह के 6 बज रहे थे आश्रम में ही टायलेट – बाथरूम की व्यवस्था थी, सो ब्रश आदि करने के पश्चात हमे बताया गया की पास में लगभग 500 मीटर की दूरी पर ही माँ नर्मदा प्रवाहित होती है . हमने अपनी थकान माँ नर्मदा के अंचल में मिटाने चल पड़े गुरुदेव का प्रिय टाइगर हमें रास्ता बताने साथ हो लिया नदी की गहराई के बारे में जानकारी के लिए हमने लखन को भी संग लिया . अद्भुत अवर्णनीय माँ के गोद में पहला कदम और लगा की शरीर की सारी थकान पंजो से बाहर उतर रही है . लगभग आधे घंटे हम माँ के गोद में अटखेलिया करते रहे . माता ने यहाँ पर बड़ी बड़ी

चट्टाने रखी थी जिसमे हम कभी बैठते कभी लेट जाते ,धारा का वेग कुछ तेज था पानी एक दम निर्मल जो हमारे अंग प्रत्यंगो की मसाज कर रहा था . हम आश्रम में जितने दिन रहे सुबह शाम माँ की गोद में घंटो बैठते और अपनी समस्त चिंताए माँ को समर्पित कर देते. आश्रम की हरियाली पक्षियों की चहचाहट मन और चित्त को निर्मल करती. गुरूजी का प्रात:कालीन पूजा करने के पश्चात उनका प्यार से हमारे मस्तक पर त्रिपुंड तिलक लगाना और आशीर्वाद देने से पंच्कोशीय शरीर में एक अजीब सी ऊर्जा का अनुभव होता था. फिर हम सब जुट जाते नास्ते और चाय के लिए जिसे गुरूजी

अपने हाथों से हमें देते . इस दौरान हम कई बार गुरूजी को छेड़ते कभी उनके चरणों को स्पर्श कर जोर से दबाते तो वो अपना पाँव छुपाते और हम फिर उनके पाँव को ढूढ़ते कभी वो हमको झिडकते और कभी हमारी थाली में और प्रसाद डाल कर मुस्कुराने लगते. सामान ज्यादा नहीं फिर भी बहुत कुछ था जो मुझे जीवन की यथार्थता की सीख दे रहा था.सांसारिक सुखो का अभाव लेकिन अध्यात्म का प्रभाव मेरे स्वभाव में कुछ परिवर्तन की दस्तक दे रहा था.

खैर प्रथम दिन ही हमने गुरुदेव से विभिन्न जगहों पर भ्रमण की इच्छा जाहिर की थी तो गुरूजी ने पहले गोगेवा चलकर संत श्री श्री 1008 सियराम बाबा जो की 116 वर्ष के है ,के दर्शन उपरान्त जाम गेट महू रोड पर पहाड़ी के सबसे उपर स्थित महंत श्री श्री 1008 निरंजन भारती जी के आश्रम चलकर आशीर्वाद लेने की बात कही . दुसरे दिन का प्लान उज्जैन के बाबा महाकाल और काल भैरव के दर्शन उपरान्त नलखेडा की बगलामुखी माता के दर्शन का था. तृतीय दिन विश्राम और गुरुदेव के अन्य भक्त जो इंदौर और आसपास रहते थे उनसे मुलाक़ात के लिए निर्धारित हुआ एवं चतुर्थ दिन रंगपंचमी को गुरदेव के साथ आश्रम में रंग पंचमी के रंग खेलने के पश्चात ओंकारेश्वर ङ्क ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग दर्शन पश्चात दुर्ग – रायपुर वापसी का . मै अपनी इस अद्भुत यात्रा के एक एक दिन का वर्णन आने वाले विडियो में करूंगा संतो के संग माँ नर्मदा और महादेव के आशीर्वाद के लिए जुड़े रहे और चैनेल को सबस्क्राइब करें

,

दूसरा दिन

जैसा कि मैने आप लोगो को बताया कि रात को मंडलेश्वर के समीप स्थित नर्मदा कुटी में पंचदशनाम जूना अखाड़ा के महंत श्री वेदानंद जी के आश्रम में किस तरह विश्राम किया और सुबह नर्मदा स्नान कर चाय नाश्ता के पश्चात महंत श्री वेदानंद जी के साथ संत श्री सियाराम बाबा के दर्शन हेतु गोगावां की ओर निकल पड़े . मुझे सुबह जानकारी मिली कि 95 वर्ष के श्री वेदानंद जी तीन बार नर्मदा परिक्रमा कर चुके है

बाबा सियाराम के आश्राम तक जाने के लिए हमें नर्मदा जी के दुसरे छोर पर जाना था. बाबा के बारे में थोड़ी जानकारी बाबी द्वारा. नाव आने की बात राधे से 37 मी.

नाव में ठीक ठाक भीड़ थी लोग अपनी दुपहिया वहन को भी सवारी करा रहे थे .हम सभी ने अपनी जगह बनाई और लगभग एक किमी की दूरी तय कर दूसरे पार आगये . बॉबी ने पहले ही जानकारी दी थी कि बाबा की उम्र इस वक्त लगभग 116 वर्ष है. नाव में कुछ और लोगो से चर्चा हुई उन्होंने बताया कि बाबा नित रामायण का पाठ करते है और उन्हें चश्मा भी नहीं लगा है . चाहे कडाके की ठंड हो या फिर भीषण गर्मी बाबा सदैव मात्र एक लंगोट में रहते है . भक्त बताते है की बाबा ने 10 वर्षो तक नर्मदा में खड़े हो कर मौन तप किया और जब बोले तो सियाराम शब्द निकला. तब से उनका नाम सियाराम

बाबा पड गया. बाबा कहाँ से आये इसकी ख़ास जानकारी नहीं है. बाबा हुनमान जी के भक्त है नर्मदा किनारे बरगद पेड़ के निचे छोटा सा हुनामन मंदिर है जिसे किसी विवाद के चलते दीवार से पूरा ढँक दिया गया है ग्रामीण बताते है इस दीवार पर कान लगाकर ध्यान से सुनने पर घंटी की आवाज आती है . मन्दिर के पास ही एक तुलसी चबूतरा है श्री वेदानन्द जी ने बताया की यह श्वेत तुलसी है . राजा भोज ने कभी इसका पूजन किया था और सियाराम बाबा जी आज रोजना इस तुलसी की पूजा करते है.

बाबा सियाराम के दर्शन पश्चात हम निकल पड़े जाम गेट की ओर मंडलेश्वर–इंदौर– महू मार्ग पर मंडलेश्वर से लगभग 45 किमी और इंदौर से करीब 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक प्राकृतिक सुंदरता से घिरा हुआ ऐतिहासिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। विंध्याचल की पहाड़ियों पर स्थित घुमावदार घाट की चोटी पर यह ऐतिहासिक स्मारक स्थित है, जहां के दिलचस्प नज़ारे आपका मन मोह सकते है। जाम गेट व रोड का निर्माण महारानी अहिल्याबाई होलकर ने कराया था। जिसका उपयोग वों महेश्वर से इंदौर आने–जाने के लिए करती थीं। जाम गेट की ऐतिहासिक इमारत दो मंजिला है। ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों की व्यवस्था है। आप आराम से सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर जा सकते हैं और दूर–दूर तक का सुंदर नजारा देख सकते हैं। दूर–दूर तक फैली घाटी बहुत ही आकर्षक लगती है। कहा जाता है कि यहां पर होलकर राजा शिकार करने के लिए आया करते थे और उन्होंने अपने आराम के लिए इस स्मारक का निर्माण करवाया था। जाम गेट के पहाड़ी की सबसे ऊँची छोटी पर मनोरम दृश्यों के मध्य माता पार्वती का मंदिर है . इस मंदिर के ठीक निचे एक मोड़ पर पंच दशनाम अखाड़े के महंत श्री नारायण भारती जी का आश्रम है . हमारे आने की सूचना गुरुदेव श्री वेदानंद जी ने उन्हें दे दी थी. आश्रम पर हमारा स्वागत बंदरो की टोली से हुआ जिन्होंने हमारे कार को घेर लिया . हमारे पास कुछ खाने का सामान था जिसे उन्हें देकर हमने उनसे अन्दर जाने की अनुमति ली. श्री नारायण भारती जी अपने मित्र श्री वेदानंद जी का अत्यंत हर्ष के साथ अभिवादन किया तो हमारे दंडवत होते ही हम सभी पर अपना आशीर्वाद उड़ेल दिया. मुलाक़ात महिला नागा साध्वी श्रीरेवा माता से भी हुई हमने उनका भी आशीर्वाद लिया . उनके अपने असन में विराजते ही हम सभी उनके चरणों के समीप बैठ गए . आश्रम का दृश्य नैनाभिरामी था माता पार्वती,शिव के साथ आश्रम में माता नर्मदा भी विराजमान थी . दोपहर का समय था गर्मी बढ़ रही थी टेम्पेरचर लगभग 42 डिग्री बता रहा था लेकिन गुरुओ का सानिध्य शीतलता दे रही थी . हम चलने की अनुमति मांगते उसके पहले ही श्री नारायण भारती जी ने कहा आप लोग होली में आयें है तो हम आप लोगों को पकोड़े खिलाते है , भूख तो लग ही रही थी सो हम हाथ बटाने को तैयार हुए तो उन्होंने मना कर दिया कुछ देर में ही गरमा गरम पकोड़े ,टमाटर की चटनी के साथ मिर्ची भजिया भी परोस दिया . गुरूजी कड़ाही से निकालते और हम स्वाद से अभिभूत हुए जा रहे थे. पकोड़ो का दौर अभी खत्म ही नहीं हुआ कि महंत श्री ने रोटी–चावल और सब्जी भी परोस दी। साथ में मठा (छाछ) भी. इतना सारा प्रसाद ग्रहण कर पेट फूल कर कुप्पा हो गया, हमारी स्थिति को देखकर रेवा माता ने कहा की सामने वाली कुटिया में पंखा ,पलंग आदि की व्यवस्था है आप सभी वहाँ जाकर विश्राम करें. हम भी आज्ञाकारी बालक की तरह उनके निर्देश का पालन किया और कमरे में आ गए . कुछ देर विश्राम करने के पश्चात पास में बने बाथरूम में जाकर फ्रेश हुए और पुनः गुरुदेव और माता के समीप आ गए आज की विदा लेने. शाम के 5 बज रहे थे उनकी इच्छा थी की हम अभी और रुके. वे चाय बनाकर लाये . हमने कहा की हमे कल सुबह महाकाल के दर्शन हेतु जाना है तो महंत श्री ने कहा की जाने का मार्ग तो यही है, नाश्ता यहीं करना होगा तो अनुमति दूंगा. उनके इस प्रेमाग्रह को शिरोधार्य कार्य हम वापस महंत श्री वेदानंद जी के साथ उनके आश्रम मंद्लेश्वर आ गए . शाम के 6.15 बज गए थे हम जल्दी से अपने कपडे लिए और पहुँच गए माँ नर्मदा के गोद अटखेलिया करने.स्नान और संध्या पूजन के पश्चात पुनः हम भोजन की तैयारी में लग गए . भोजन उपरांत गुरुदेव से जीवन उपयोगी चर्चा पश्चात हम सब सोने आ गए सुबह जल्दी जो उठना था .

क्योंकि कल हमे श्रीमहाकाल, काल भैरव और बगलामुखी माता का दर्शन करने जाना था अर्थात लगभग 250 किमी जाकर पुनः लौटना था. कुल मिलाकर 500 किमी का सफ़र. तो आप भी करे विश्राम मै चला सोने कल सुबह नर्मदा स्नान पश्चात फिर मिलूंगा . नर्मदे हर, नमो नारायण.

आयुर्वेदिक दवाओं का भी साईड इफेक्ट होता है

आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज ,रायपुर में काय चिकित्सा विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ.(प्रो.) अरुणा ओझा से लाईफ वर्सिटी की विशेष चर्चा

कोई भी व्यक्ति बीमार नहीं होना चाहता फिर भी हम बीमार पड़ जाते है. शरीर में कोई रोग नहीं होने का मतलब स्वस्थ होना नहीं होता रोगमुक्त होने और स्वस्थ होने में बहुत अंतर है . आज डाक्टर कहते है की बीमारिया हमारें गलत लाईफ स्टाइल की वजह से हो रही है . विश्व स्वास्थ संगठन तो कहता है की 80त्न से अधिक बीमारियां सायकोसोमेटिक है. भारतीय आयुर्वेद हमेशा से जीवन शैली की बात करता रहा है. आयुर्वेद के असर और अफवाहों पर लाईफ वर्सिटी के सम्पादक नरेन्द्र पाण्डेय और श्री नारायण प्रसाद अवस्थी शासकीय आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज,रायपुर, छग में काय चिकित्सा विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ.(प्रो.) अरुणा ओझा से चर्चा के कुछ अंश :–

चूरन ,वटी, और काढा के अलावा आयुर्वेद क्या है?

डॉ.अरुणा ओझा –ये सब तो औषधियों की कुछ कल्पनाये है . आयुर्वेद का क्षेत्र विशाल और असीमित है. अब जैसे आंवले को लीजिये तो इसे चूरण,टैबलेट,काढा के रूप में दिया सकता है इसका एक सबसे प्रचलित औषधि है चवनप्राश.अब तो आंवले का रस भी जूस के फ़ार्म मिलता है. आयुर्वेद इतना साइंटिफिक है कि इनके अलग अलग फ़ार्म में इनकी प्रापर्टी भी चेंज हो जाती है . किस उम्र में और किस बीमारी के लिए प्रयोग किया जाना है उसके हिसाब से इन प्रकारों का प्रयोग किया जाता है. अब आधुनिक ज़माने में इनकी उपलब्धता मार्डन पैकेजिंग की हो गई है.

विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में आयुर्वेद कैसे भिन्न

हमें आयुर्वेद का चुनाव इसलिए करना चाहिए क्योंकि इसमें आयु का विशेष ज्ञान निहित है. अर्थात एक गर्भस्थ शिशु से लेकर व्यक्ति के अंतिम साँसों तक उसके रहन–सहन,आहार–विहार,विचार आदि का ज्ञान और अनुसरण आयुर्वेद है. प्रचलित सभी पद्धिति लगभग बीमार होने के पश्चात चिकित्सा करती है जबकि आयुर्वेद केवल चिकित्सा नहीं करता अपितु स्वस्थ रहने का उपाय भी बतलाता है.इसलिए यह चिकित्सा शास्त्र नहीं बल्कि जीवन का शास्त्र है. यह जीवन जीने की कला बतलाता है. आयुर्वेद शारीरिक स्वास्थ्य से ज्यादा मानसिक स्वास्थ्य का ज्ञान है. और वब तो विश्व स्वास्थ्य संघठन भी मानता है कि 80त्न से ज्यादा बीमारिया मानसिक असंतुलन के कारण होती है. इससे उपर आयुर्वेद सामाजिक स्वास्थ्य पर भी बहुत बल देता है.

आयुर्वेद चिकित्सकीय पद्धति प्रिवेंटिव है या प्रिवेंशन

आयुर्वेद जीवन का विज्ञान है इसलिए सके प्रमुखतः दो भाग है प्रथम प्रिवेंटिव और प्रिवेंशन भी एसा की सुबह शाम आपकी लाईफ स्टाइल कैसी होनी चाहिए, आपका भोजन कैसा होना चाहिए , कब सोना चाहिए ,कब जागना चाहिए आदि और ये सब उम्र और मौसम के अनुसार बदलते है. इतना वैज्ञानिक है आयुर्वेद.लेकिन यदि इतने प्रिवेंशन के बाद भी यदि व्यक्ति बीमार हो जाए तो आयुर्वेद में एसी कोई भी बीमारी नहीं है जिसका उपचार न बताया गया हो.

संक्रामक और असंक्रामक बीमारियों में आयुर्वेद का महत्व

अब तो डब्ल्यूएचओ भी मानने लगा है कि नान कमुनिकेब्ल डिसीज जिनमे बहुत से रोग लाईफ स्टाइल से सम्बन्धित होते है का समुचित ईलाज आयुर्वेद में ही है.अब तो नेशनल हेल्थ मिशन के अंतर्गत लगभग 20त्न सेंटर आयुर्वेद के खुल रहे है. ताकि नान कमुनिकेब्ल डिसीज पर काम किया जा सके. बात करें कमुनिकेब्ल डिसीज की तो कोविड का दौर सभी को याद है किसी भी विधा के लोगो को कुछ समझ नहीं आ रहा था . इसके प्रोटोकाल भी जल्दी जल्दी चेंज हो रहे थे . लेकिन हमारे देश के आयुर्वेद के ज्ञाताओ ने उसके लक्षणों को देखते हुए उपाय खोज लिया . आयुर्वेद में इस बीमारी के तरह के लक्षण के प्रोटोकाल वर्णित है और कोविद में जिन लोगो ने दवाइयों के साथ आयुर्वेद के प्रोटोकाल का पालन किया उनमे काम्प्लिकेशन नहीं आये आया कम आये थे .तब समझ में आया की आयुर्वेद कमुनिकेब्ल के साथ नान कम्युनिकेब्ल डिसीज पर भी बेहतर काम करती है.कमुनिकेब्ल डिसीज का एक उदाहरण देना चाहती हों जैसे यदि कोई व्यक्ति भीड़ वाली जगह पर जाता है और वहाँ पर tyu-berculesis का मरीज मिलता है और वहाँ पर यदि 50 व्यक्ति है तो उनमे से किसी एक को ही यह संक्रमण होने की संभावना होगी. यह उन व्यक्तियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता अर्थात इम्म्युनसिस्टम पर निर्भर करता है. तो आयुर्वेद की पद्धति हमारे रोग प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर रखती है. अगर हमारी रोग प्रतिरोघक क्षमता बेहतर रहेगी तो हमारा शरीर किसी भी प्रकार के इन्फेक्शन के कारको को फैवारेबल कंडीशन उन पैथोजेन को नहीं देगा . इस तरह से भी आयुर्वेद कम्युनिकेब्ल डिसीज से प्रिवेंट करता है.

आयुर्वेद के डाक्टर परहेज बहुत करवाते है

आयुर्वेद का तो बेस ही परहेज है इसके बिना तो आयुर्वेद चल ही नहीं सकता .आयुर्वेद में पथ्य और अपथ्य होता है . पथ्य मतलब जो हमारे शरीर के जितने भी चैनेल है उसके लिए आवश्यक है बिना पथ्य के दवा लेने का कोई फायदा नहीं होता . और यदि वह दैनिक जीवन में पथ्य का पालन करता है तो भी उसे दवा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती . क्योंकि पथ्य का पल्कारने से हमारे शरीर की फिजियोलाजी खुदबखुद नार्मल हो जाति है. क्योंकि सारी बीमारियाँ खान–पान से ही शुरू होती है. तो सोर्स को तो बंद करना ही पडेगा . आयुर्वेदिक डाक्टर खाने की बहुत सी अच्छी चीजे भी बतलाते है.

आयुर्वेदिक दवाओं देर से असर करती है और इनका साइड इफेक्ट नहीं होता

ये बात बिलकुल गलत है की आयुर्वेदिक दवाईया देर से असर करती है यह बीमारी बीमार के कंडिशन ऊपर निर्भर करता है . क्रोनिक केसेस में जरुर कुछ समय लगता है. हां आम लोगो में ये धारणा जरुर है जो कि सही नहीं है लोग हमारे पास भी आते है और कहते है कि ये तो आयुर्वेदिक दवा है इसका कोई फायदा नहीं मिलेगा तो कोई साइड इफेक्ट नहीं होगा . जब अधिक खाना और अधिक पानी हमारे सह्रीर को नुकसान पहुंचा सकते है तो ये तो दवाईया है . हां अन्य पैथियों से अंतर इतना है की आयुर्वेद की दवा में प्रकृति ने एसी चीज रखी है कि किसी एक के चलते कोई साइड इफेक्ट होगा तो उसी में मौजूद दूसरी औषधि उसका काउंटर भी कर देती है . पर यह चिकित्सक के उपर निर्भर करता है किसकी कितनी मात्रा उपयुक्त होगी. किसी के लिए चूर्ण 1 ग्राम तो किसी के लिए उसी बीमारी के लक्ष्ण में 10 ग्राम भी हो सकती है. तो यदि कोई अपने मन से दवाईया लेता है तो निश्चित रूप से उसका साइड इफेक्ट होगा या फिर उस दवा का असर नहीं होगा . आयुर्वेद की दवा का दूध के साथ अलग,शहद के साथ अलग,गुनगुने पानी के साथ अलग और ठन्डे पानी के साथ अलग असर होता है.

झीरम के शहीदों का सबूत आखिर जेब से कब निकालेंगे भूपेश?

आशीष विनय तिवारी

रायपुर/राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी अपने घोटालों से बुरी तरह घिर चुकी है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर भी अब महादेव ऐप और शराब घोटाले को लेकर गिरफ्तारी की तलवार उनके सर पर लटकती हुई साफ साफ नजर आ रही है। वहीं पार्टी के कार्यकर्ताओं और बड़े पदाधिकारियों का भी अब कांग्रेस पार्टी के प्रति मोहभंग होता स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है, इसी कड़ी में पार्टी से अब कार्यकर्ताओं के इस्तीफे का दौर शुरू हो गया है जहां पूर्व कांग्रेस नेता चंद्रशेखर शुक्ला जिन्हें किसान आंदोलन का महत्वपूर्ण घटक माना जाता था और शुक्ला किसान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष तथा प्रदेश संगठन प्रभारी महामंत्री के पद पर रहे अब उन्होंने भी कांग्रेस से अपना इस्तीफा सौंप भाजपा का दामन थाम लिया है।

हाल ही में राहुल गांधी के बस्तर दौरे में भाजपा नेता चंद्रशेखर शुक्ला ने राहुल पर 3 सवाल दागे–

01. कवासी लखमा को पूरा छत्तीसगढ़ और पूरा काँग्रेस झीरम घाटी नरसंहार का संदिग्ध मानता है तथा जिसे तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष डॉ. चरण दास महंत ने भी 2013 में संदिग्ध ठहराया था को आपने क्या क्लीन चिट देकर लोकसभा का उम्मीदवार बनाया है?

02. क्या झीरम के शहीदों को आप शहीद नहीं मानते हैं या सिर्फ शहीद सिर्फ वही हैं जो आपके परिवार से हैं, आपने इनको न्याय दिलाने के लिये संसद में कितनी बार मांग/प्रयास किया है?

03. पूर्व मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जिन सबूतों को जेब में डाल के रखे हुये हैं वह सबूत कब बाहर आयेंगे? अब तो आपकी सरकार भी चली गई माननीय भूपेश बघेल जी किसे बचाना चाहते हैं।

मेरा यह मानना है झीरम घाटी का नरसंहार काँग्रेस के नेताओं की आपसी खूनी रंजिश की परीणिती है जिसमें शहीद विद्या भैय्या, शहीद नंद कुमार पटेल, शहीद महेन्द्र कर्मा जी और शहीद उदय मुदलियार सहित 31 अन्य काँग्रेस कार्यकर्ताओं को शहादत देनी पड़ी थी।

राजनांदगांव लोकसभा सीट से भाजपा सांसद प्रत्याशी संतोष पांडेय तथा भाजपा कार्यकर्त्ता चंद्रशेखर शुक्ला ने इस पूरे मुद्दे पर पूर्व मुख्यमंत्री बघेल को जमकर घेरा और उस समय के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष चरणदास महंत पर भी जमकर निशाना साधा। भाजपा सांसद प्रत्याशी संतोष पांडेय ने कहा कि राजनांदगांव का वो वीर सपूत विधायक उदय मुदलियार का परिवार पूरा नगर न्याय चाहता है क्योंकि इन्होंने कहा था कि न्याय मै दिलाऊंगा, और वो सबूत मेरे जेब में है, वो एक कागज की ओर इशारा किया करते थे फिर कागज जेब में डाल लिया करते थे, कहां है वह सबूत , कब मिलेगा न्याय ? संतोष पांडेय ने कहा कि राजनांदगांव की जनता ये जानना चाहती है भूपेश बघेल जी आप इस लोकसभा से उम्मीदवार हैं। आगे संतोष पांडेय ने कहा कि जिस प्रकार से चरणदास महंत ने कवासी लखमा के गाल पर थप्पी देते हुए कहा था कि 'क्यों रे ये सब क्यों किया' तो ये जो क्यों किया कहा गया वह क्या है ? अगर ये क्यों किया करने वाले हैं तो भूपेश जी आपने उन्हें टिकट कैसे दे दिया। यह इनकी फितरत है इनके रक्त में है कि ऐसे हत्या और कृत्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाना और ऐसे कई उदाहरण हैं जिसमे कहीं ना कहीं ये संदिग्ध हैं और शामिल हैं, इसकी जांच होनी चाहिए।

चंद्रशेखर शुक्ला ने कहा कि निश्चित रूप से जो झीरम घाटी की जांच जो अपूर्ण है और उस वक्त के तत्कालीन कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष चरणदास महंत जो आज वर्तमान में नेता प्रतिपक्ष हैं, कवासी लखमा जी को लगभग आरोपी ठहरा दिया था और अस्पताल में डांटा पीटा भी था जिसका वीडियो भी आया था जिसे हम सबने देखा है। अब ऐसे में उनको टिकट देना मतलब यह है कि या तो उस समय वो गलत थे या फिर उनको क्लीन चिट दे दी गई तो फिर इसका क्या आधार था। शुक्ला ने कहा कि इस पूरे प्रकरण को राहुल गांधी ने 10 सालों से संसद में क्यों नही उठाया ? भूपेश बघेल जी भी अक्सर ये कहते हैं कि मेरे जेब में सबूत है तो आखिर वो अपने जेब से सबूत को निकालते क्यों नहीं , आखिर किसको बचाना चाह रहे हैं और किस अभिजात मूहूर्त का इंतजार भूपेश बघेल कर रहे हैं ?

चंद्रशेखर शुक्ला विगत 30 वर्षों से कांग्रेस पार्टी के समर्पित सिपाही रहे और विभिन्न बड़े पद पर भी रहे लेकिन छत्तीसगढ़ कांग्रेस पार्टी में भूपेश नेतृत्व का भ्रष्टाचार और घोटाला तथा भगवान राम और हिंदुत्व विरोधी रुप अब उन्हें रास नही आ रहा।

चंद्रशेखर शुक्ला विधानसभा और महासमुंद लोकसभा से भी प्रबल दावेदार रहे लेकिन उन्हें उम्मीदवार घोषित करने का झूठा आश्वासन भी दिया गया। शराब, कोल खनन परिवहन,मनी लांड्रिंग, महादेव सट्टा ऐप, चांवल, राइस मिलिंग, यहां तक की गाय, गोबर को भी भूपेश नेतृत्व सरकार ने नही छोड़ा और किसानो के साथ भी छल किया।

भाजपा नेता चंद्रशेखर शुक्ला ने कहा कि मेरा शहीद उदय मुदलियार के परिवार से भी आग्रह है कि राजनांदगांव चुनाव के प्रत्याशी भूपेश बघेल जी को सबूत को सार्वजनिक करने का आग्रह करें।

आधुनिक विदेश नीति के शिल्पकार थे 'अटल'

भाजपा के पहले अध्यक्ष अटल बिहारी बाजपेयी की जिन्होंने 6 अप्रैल 1980 को पार्टी के पहले अधिवेशन में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा था कि 'भाजपा का अध्यक्ष पद कोई अलंकार की वस्तु नहीं है। ये पद नहीं दायित्व है। प्रतिष्ठा नहीं है परीक्षा है। ये सम्मान नहीं है चुनौती है। मुझे भरोसा है कि आपके सहयोग से देश की जनता के समर्थन से मैं इस जिम्मेदारी को ठीक तरह से निभा सकूंगा।'

13 महीने की सरकार के गिर जाने के बाद अटलजी ने कहा था 'सरकारें आएंगी, जाएंगी, पार्टियां बनेंगी, बिगड़ेंगी मगर ये देश रहना चाहिए।' चन्द्रशेकर साहू उस समय महासमुंद लोकसभा से निर्वाचित सांसद थे . **अटल जी को याद करते हुए छत्तीसगढ़ के पूर्व मंत्री व पूर्व सांसद चंद्रशेखर साहू ने कुछ बाते नरेन्द्र पाण्डेय से साझा किये–**

अटल जी की इस पंक्ति को आप कैसे याद करते है..

हमने अभी कुछ दिन पूर्व ही भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस मनाया है मै श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जी को नमन करता हूँ जो पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष रहे. उन्होंने आह्वान किया था सूरज निकलेगा,अन्धेरा छटेगा कमल खिलेगा. आज यह उद्घोष प्रत्येक कार्यकर्ता के मानस पटल पर है.मुझे उनके साथ कार्य करने का अद्भुत अनुभव रहा है. सहज,सरल और स्मिग्ध मुस्कान के साथ वो हर किसी से मिला करते थे. वह एक कठिन दौर तेरहवी लोकसभा में जब हम लोग चुनकर गए थे.मै उस समय के कांग्रेसी दिग्गज संत पवन दीवानजी को हरा कर संसद पहुंचा था. उस समय क्षेत्र से न कोई विधायक था न पंचायत प्रतिनधि इसलिए लोगों की अपेक्षाए भी बहुत थी.लेकिन उस समय काम करने का जज्बा,एक क्रमबद्धता बिलकुल ही अलग था. बड़े बड़े नेताओं का क्षेत्र होने के बावजूद भी अत्यंत पिछड़ा होने से लोगो की अपेक्षाए ज्यादा थी. जब अटल जी से मिलते थे तो लगता था सब हो जायेगा. सभी दलों को साथ लेकर चलने वाले नेता थे. यह वाही दौर था जब एक कामन एजेंडा फार गवर्नेंस बना था .

दक्षिणपंथी विचारधारा वाली पार्टी के साथ 26 दल कैसे आये

अटलजी राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वमान्य राजनीतक व्यक्तित्व रहे है सब को जोड़कर रखने की उनमे एक अद्भुत क्षमता थी. हमे दक्षिणपंथी किस बात के लिए कहा जाता है ये समझ के परे है खैर वामपंथ तो पूरे विश्व में ही ढह गया . भाजपा राष्ट्रवादी पार्टी है जिसके लिए राष्ट प्रथम है शेष बाद में है. उस समय जब मेनिफेस्टो तैयार किया गया था तब यह शब्द प्रथम में था जो आज तक चल रहा है , अभी पिछले दो ढाई दशक से जो राजनितिक परिदृश्य है उसमे भारतीय जनता पार्टी राजनीति के केंद्र बिंदु पर आ गई है.

मतदान के बाद अटल जी का भाषण कि 'मै बहुमत के आगे ,संख्या बल के आगे सर झुकाता हूँ और हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि जो कार्य हमने अपने हाथों में लिया है, उसे पूरा किए बिना विश्राम नहीं करेंगे. अध्यक्ष महोदय, मैं अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को देने जा रहा हूं.' मेरे आँख से आँसू आ गए थे मै रो पडा था .

वो क्षण जब 13 माह की अटल सरकार गिरी थी

उस लम्हे , उस क्षण को याद करके आज भी मन व्यथित हो जाता है. अटल जी का वो एतिहासिक भाषण, पूरा सदन गौर से सुन रहा था चाहे पक्ष हो विपक्ष. जब मतदान की घोषणा हुई तो एक विषय आया कि ओड़िसा के एक सांसद जो उस समय ओड़िसा के मुख्यमंत्री निर्वाचित होकर शपथ ले चुके थे उन्हें मत देने का अधिकार है या नहीं . आसंदी के समक्ष दोहरी सदस्यता का प्रश्न रखा गया है .उस दिन यदि आसंदी निर्णय हमारी तरफ लेता तो आज समय कुछ और कहानी लिख रहा होता, खैर वो इतिहास का एक पन्ना हो गया. मतदान के बाद अटल जी का भाषण कि 'मै बहुमत के आगे ,संख्या बल के आगे सर झुकाता हूँ और हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि जो कार्य हमने अपने हाथों में लिया है, उसे पूरा किए बिना विश्राम नहीं करेंगे. अध्यक्ष महोदय, मैं अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को देने जा रहा हूं.' मेरे आँख से आँसू आ गए थे मै रो पडा था . पुनः चुनाव हुआ इस बार मेरे विरूद्ध कांग्रेस के वरिष्ठ , दिग्गज एवं एकीकृत मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री पं श्यामाचरण शुक्ल मेरे विरुद्ध मैदान में थे अब इसे मेरा दुर्भाग्य कहे या सौभाग्य मै 14000 वोटो से चुनाव हार गया . लेकिन दिल्ली में अटल सरकार बनी और मै भी शपथ के उस एतिहासिक पल का साक्षी बना.

संत पवान दीवान से आपके सम्बन्ध ?

पवन दीवान जी और हम सभी छत्तीसगढ़ निर्माण आंदोलन में एक साथ थे. उस समय नारा भी चलता था पवन नहीं आँधी है छत्तीसगढ़ का गांधी है . उस नारे को विस्तार देने वाले में थे हम लोग . किसी कारण से वो कांग्रेस में चले गए और पहला चुनाव 1989 में जब लड़ा उस समय कुछ मतों से पीछे रहे . जब 1991 में राम मंदिर का मुद्दा आया तब मै दूसरी बार का विधायक था .

उस समय के हमारे संगठन के शिल्पी कुशाबहू ठाकरेजी ने कहा की आप दीवान जी के विरुद्ध लोकसभा चुनाव लडे और मुझे इस बात की ख़ुशी है कि भारतीय जनता पार्टी के विस्तार को , भाजपा के जनाधार को , पोलिटिकल विजन को वहाँ रोपित करने में हमारी भूमिका अग्रणी रही. हम लोगों को गुरु चेला कहा जता था क्योंकि राज्य आन्दोलन में हम एक साथ थे . पहले चुनाव में मै लगभग 21000 वोटो से हारा था . अखबार वालो ने हार पर मुझसे प्रतिक्रया मांगी तो मैंने कहा था कि यह सीट मैंने श्रद्धेय पवन दीवान जी को गुरु दक्षिणा में दे दिया.

अटल और उनकी विदेश नीति –

निश्चित रूप से विदेश निति के ऊपर अटलजी का अध्यन और उनका दृष्टिकोण , उनका चिन्तन ऊँचे स्तर का था देश विदेश के सभी राजनेता उनके विदेश निति के व्याख्यानों के कायल थे .

उन्होंने भारत की विदेश निति को नई परिभाषा दी है. वो ज़माना था जब रूस और अमेरिका शीत युद्ध पर टिके थे . दुनिया के सभी देश दो खेमों में बंटे थे , भारत उस समय रूस के करीब था . लेकिन अब जो परिवर्तन हुआ है भारत ने अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से विस्तारित किया है,अब भारत एक ऐसे देश के रूप में उभरा है जिसकी अर्थव्यवस्था भी मजबूत हो रही है.

पिछले ढाई तीन दशको में चीन ने जो आर्थिक और सामरिक शक्तियां हासिल किया है उसके मुकाबले में आज अमेरिका और रूस दोनों को लगता है की एक भारत ही है जो चीन के विस्तारवाद को रोक सकता है. हमारे साथ में बहुत सारी विसंगतियां है,चुनौतिया है,लक्ष्य बड़े है,लेकिन इसके बाद भी राजनीति,सामजिक और आर्थिक धुरी के रूप में भारत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा आसमां पब्लिशर्स इंडिया प्रा.लि. जयराम काम्पलेक्स गली, मालवीय रोड, जयस्तंभ चौक रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979